राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 45 ■ अंक 10 ■ जनवरी 2024 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 36

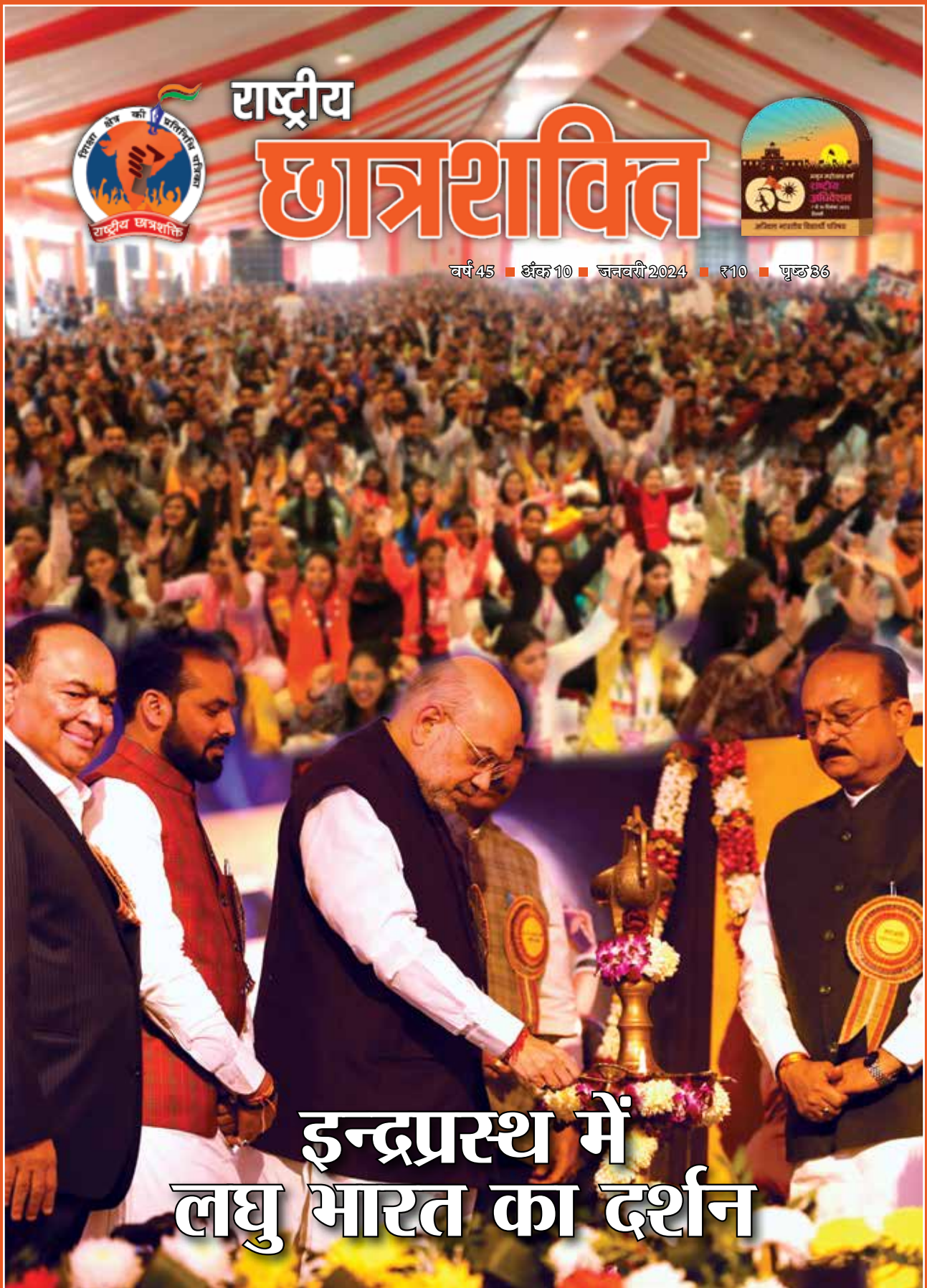

इन्द्रप्रस्थ में लघु भारत का दर्शन

राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियां

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा-क्षेत्र की प्रतिनिधि-पत्रिका

वर्ष 45, अंक 10
जनवरी 2024

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक-मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नई दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05 **इन्द्रप्रस्थ में लघु भारत का दर्शन**

देश की राजधानी दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र में स्थित डीडीए मैदान में महीने भर से की जा रही तैयारियों को जब अंतिम...

संपादकीय 04

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के ध्येय को स्पष्ट कराती है प्रदर्शनी : राज कुमार भाटिया 09

भारतीय संस्कृति को दर्शाती दत्ताजी स्मृति प्रदर्शनी 10

विद्यार्थी परिषद ने रचा नया इतिहास, सदस्यता हुई 50 लाख के पार 11

विद्यार्थी परिषद का उद्देश्य राज करना नहीं बल्कि समाज बदलना है : आशीष चौहान 13

बदल रही हैं भारत की वैश्विक भूमिका : मुकुंद सीआर 15

वन्देमातरम के नाद से गूंजा इंद्रप्रस्थ 17

खुले अधिवेशन में पाक अधिक्रान्त जम्मू-कश्मीर में तिरंगा फहराने का आह्वान 18

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित किए गए शरद, लहरीबाई और डा. वैभव 19

अभाविप ने संघर्षों से सामना करना सिखाया : रजत शर्मा 20

राष्ट्रीय पदाधिकारी 21

वैश्विक कल्याणकारी भारतीय कूटनीति 22

विवेकशील विकास पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक 23

Rise in attacks and deaths in Pakistan 24

जान बचाने की कोशिश पर विद्यार्थी परिषद के दो कार्यकर्ताओं को मिली जेल 26

वामपंथी सरकार के गुंडों से केरल के शैक्षणिक संस्थान त्रस्त 28

आरजेडी कैडर की तरह काम कर रही बिहार पुलिस 29

जन्मभूमि पर पुनः विराजेंगे भगवान श्रीराम 30

ABVP submits a Memorandum to Union Education Minister 33

अभाविप ने पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष-महामंत्री प्रो. वेद प्रकाश नंदा के निधन पर किया शोक व्यक्त 34

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

यह सुखद संयोग है कि अभाविप जब अपनी स्थापना का अमृत महोत्सव मना रही है, देश की दो चिर प्रतीक्षित मांगें पूर्ण हो रही हैं। वह हैं श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण और जम्मू-कश्मीर में अलगाव के स्रोत अनुच्छेद-370 के संशोधन पर सर्वोच्च न्यायालय की संस्तुति।

श्रीरामजन्मभूमि पर स्थित मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मंदिर का 1528 ई. में विध्वंस कर बाबर के सेनापति मीर बाकी ने मंदिर की सामग्री का ही उपयोग कर एक विवादित ढांचे का निर्माण कर दिया था। इस्लाम के सिद्धांतों के अनुसार यह मस्जिद होने की योग्यता नहीं रखती थी। इसलिए वहां कभी भी नमाज नहीं पढ़ी गयी। इससे पूर्व मंदिर की रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए 1 लाख 74 हजार सैनिकों तथा नागरिकों ने वीरगति प्राप्त की। भारतीय समाज के लिये यह मर्म पर प्रहार था।

बलिदानों की यह श्रृंखला यहीं नहीं रुकी। इसके प्रतिकार के लिए 1528 से 1949 तक की कालावधि में जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिये 76 बार संघर्ष हुए जिसमें लाखों रामभक्तों ने 'रामकाज' के लिए अपना जीवन उत्सर्ग किया। 22 दिसम्बर 1949 से वहां अखण्ड कीर्तन चल रहा था, जो आज भी जारी है। 6 दिसम्बर 1992 को आक्रोशित कारसेवकों की भीड़ ने इस विवादित ढ़ांचे को ढ़हा कर एक अस्थायी मंदिर बना दिया। यह वाद न्यायालय तक पहुंचा। सर्वोच्च न्यायालय ने श्रीरामजन्मभूमि न्यास के दावे को सही पाया तथा उक्त स्थान को न्यास को सौंप देने तथा शासन को मस्जिद के निर्माण के लिये वैकल्पिक स्थान देने का आदेश दिया। समूचे विश्व में बसे श्रीराम भक्तों के सहयोग से जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ, जिसका लोकार्पण इस माह 22 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया जाएगा।

इसी प्रकार अनुच्छेद-370 भी भारतीय संविधान के एक अस्थायी प्रावधान से अधिक कुछ न था किन्तु राजनीतिक दांव-पेचों के चलते यह अलगाव का पर्याय बन गया था। शत्रु देशों और अन्य वैश्विक शक्तियों के हस्तक्षेप के कारण अलगाव आतंक तक पहुंचा और 1990 में लाखों हिन्दुओं को कश्मीर से विस्थापन की अकथनीय पीड़ा भोगनी पड़ी। विस्थापन जम्मू में भी हुआ जहां उन्हें अपने घर-आंगन छोड़ कर सुरक्षित स्थानों पर रहने के लिये विवश होना पड़ा। आतंकवाद के इस दौर में बड़ी संख्या में सैनिक एवं अर्धसैनिक बलों के जवान व निर्दोष नागरिकों को अपना जीवन खोना पड़ा।

5 एवं 6 अगस्त 2019 को भारत की संसद ने एक ऐतिहासिक फैसले में विवाद की जड़ अनुच्छेद-370 में संशोधन कर भारतीय संविधान को समग्रता में लागू कर दिया। इस निर्णय के विरुद्ध अनेक व्यक्ति अथवा समूहों ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिकाएं दाखिल की जिन पर विचार के लिये पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ का गठन किया गया। मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता में गठित पीठ ने अपने निर्णय में विधेयकों को संविधान की कसौटी पर ठीक पाया। फलस्वरूप राज्य की शेष देश के साथ संवैधानिक एकात्मता की पुष्टि हो गई वहीं सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक एकात्मता का मार्ग प्रशस्त हो गया।

अनुच्छेद-370 का संशोधन जहां राष्ट्रीय एकात्मता का प्रश्न था वहीं श्रीरामजन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण राष्ट्रीय स्वाभिमान का। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने दोनों ही मुद्दों के समर्थन में अपना संकल्प व्यक्त किया और सक्रिय सहभाग किया। आज जब यह संकल्प फलीभूत हो रहे हैं तो परिषद का प्रत्येक पूर्व एवं वर्तमान कार्यकर्ता कृतार्थ अनुभव कर रहा है। निरन्तर वर्धमान रहते हुए संगठन के अमृत महोत्सव के अवसर पर यह दोहरी उपलब्धि उल्लास का अवसर है। 22 जनवरी को देश भर में होने वाले दीपोत्सव में भाग लेकर परिषद कार्यकर्ता भी अपना उल्लास प्रकट करेंगे।

आपका
संपादक

इन्द्रप्रस्थ में लघु भारत का दर्शन

भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक विरासत को साकार करने वाले इंद्रप्रस्थ नगर में संपन्न हुआ अभाविप का 69वां राष्ट्रीय अधिवेशन

| अजीत कुमार सिंह |

देश की राजधानी दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र में स्थित डीडीए मैदान में महीने भर से की जा रही तैयारियों को जब अंतिम रूप दिया गया, तो प्राचीन काल का इंद्रप्रस्थ नगर सजीव रूप में सामने आया। इंद्रप्रस्थ नगर का निर्माण अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए किया गया था। अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए लगभग 52 एकड़ भू-क्षेत्र में बनाए गए इंद्रप्रस्थ नगर में अभाविप के 44 प्रांतों से आने वाले कार्यकर्ताओं के साथ ही भारत में शिक्षा ग्रहण कर रहे कई देशों के विदेशी छात्र जब पहुंचे तो उन्हें साक्षात लघु भारत के दर्शन हुए।

अमृत महोत्सवी वर्ष में गत 7 दिसंबर से लेकर 10 दिसंबर तक आयोजित अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए इंद्रप्रस्थ नगर को बारह हिस्सों में बांटा गया, जिनके नाम भारतीय संस्कृति के प्रतीक एवं पुरोधा संत ज्ञानेश्वर, अहिल्या बाई होलकर, लाचित बरफूकन, भगवान बिरसा मुंडा, मदन मोहन मालवीय, गुरु तेगबहादुर, महाराणा प्रताप, गुरु नानक देव, भगवान विश्वकर्मा, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, रानी मां गाईदिन्ल्यू के नाम पर रखे गए। अधिवेशन के लिए निर्मित लगभग दस हजार लोगों की क्षमता वाले एवं तीन हिस्सों में विभाजित विशाल सभागार को अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं संघ के वरिष्ठ प्रचारक स्वर्गीय मदनदास देवी को समर्पित किया गया, जबकि इंद्रप्रस्थ नगर की व्यवस्था के लिए आंतरिक प्रशासन व्यवस्था, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आवास व्यवस्था, अतिथि कक्ष, भोजन कक्ष, भण्डारण कक्ष, केंद्रीय टीम आवास, प्रबंधन आवास, मीडिया कक्ष, कर्मचारी आवास जैसी अनेक व्यवस्थाएं सुनियोजित रूप से की गई। अधिवेशन स्थल पर लगाए गए विभिन्न स्टाल जहां विभिन्न प्रांतों से जुड़ी विशेष वस्तुओं एवं उनकी संस्कृति का प्रदर्शन कर रहे थे तो राष्ट्र एवं संस्कृति से जुड़ी पुस्तकों के स्टाल भी सभी के आकर्षण के केंद्र बने रहे।

अधिवेशन का उद्घाटन केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह, अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, राष्ट्रीय मंत्री अंकिता पवार, अधिवेशन की स्वागत समिति अध्यक्ष निर्मल कुमार मिंडा, दिल्ली प्रान्त अध्यक्ष अभिषेक टंडन, दिल्ली प्रान्त मंत्री हर्ष अत्री, स्वागत समिति महामंत्री आशीष सूद एवं अभाविप केन्द्रीय कार्यसमिति सदस्य निधि त्रिपाठी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। स्वागत समिति अध्यक्ष निर्मल कुमार मिंडा ने अधिवेशन में आए सभी प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए स्वागत भाषण दिया, वहीं अभाविप की पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं केन्द्रीय कार्यसमिति सदस्य निधि त्रिपाठी ने मंच का संचालन किया। स्वागत समिति महामंत्री आशीष सूद ने अधिवेशन में पहुंचे सभी अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

उद्घाटन समारोह के एक दिन पूर्व अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.राजशरण शाही एवं महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने ध्वाजरोहण, तत्पश्चात महामंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। महामंत्री प्रतिवेदन के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री का चुनाव संपन्न कराए गए। निर्वाचन अधिकारी डॉ छग्गन भाई पटेल ने पुनर्निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.राजशरण शाही, महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल को पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया।

अधिवेशन के तीसरे दिन यानी 9 दिसंबर 2023 को शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें देशभर से आए प्रतिनिधि पारंपरिक परिधानों में दिखे। राजधानी दिल्ली के नागरिकों ने प्रतिनिधियों का जगह-जगह पुष्पवर्षा कर शोभायात्रा का स्वागत किया। शोभा यात्रा का शुभारंभ बुराड़ी से शुरू होकर विभिन्न चौक-चौराहों से होते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक मॉरीस नगर चौराहा पर जाकर खुले अधिवेशन में परिवर्तित हो गया। अधिवेशन के अंतिम दिन 10 दिसंबर नवंबर 2023 को युवा पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि इंडिया टीवी के चेयरमेन पत्रकार रजत शर्मा थे। युवा पुरस्कार समारोह के बाद व्यवस्था परिचय किया गया तत्पश्चात अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा पुरानी कार्यसमिति को भंग कर नई कार्यसमिति की घोषणा की गई। अधिवेशन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए अभाविप राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने अधिवेशन को सफल बनाने के लिए दिल्ली प्रांत के सभी कार्यकर्ताओं को बधाई दी एवं परिषद के कार्यों को रेखांकित करते हुए आगामी दिशा पर चर्चा की।

चार दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन में शिक्षा, समाज, स्वास्थ्य, पर्यावरण और वैश्विक परिदृश्य से जुड़े विषयों पर छह अहम प्रस्ताव पारित किए गए । इसके अतिरिक्त 'अभाविप : क्रांतिकारी छात्र आंदोलन' तथा 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत एवं उसकी भूमिका' विषय पर दो भाषण भी हुए। अधिवेशन में देश के सभी प्रांतों से लगभग आठ हजार प्रतिनिधि पहुंचे थे। इनके साथ ही मित्र राष्ट्र नेपाल से सौ से अधिक अतिथि प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

देश और समाज को रचनात्मक दिशा देने की यात्रा है अभाविप : डा.राजशरण शाही

राष्ट्रीय अधिवेशन में आए कार्यकर्ताओं से अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने कहा कि दुनिया

के अन्य छात्र संगठन जहां काल के प्रवाह के साथ अपनी प्रासंगिकता को समाप्त कर रहे हैं, वहीं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एक ऐसा छात्र संगठन है जो काल के प्रवाह के साथ सतत ऊर्जावान और यशस्वी होकर अपनी ध्येय यात्रा को लगातार आगे बढ़ा रहा है। विद्यार्थी परिषद की इस ध्येय यात्रा के पीछे की ताकत, इसका वैचारिक अधिष्ठान है। अपने 75 वर्ष की यात्रा में अभाविप ने न केवल प्रश्न ही खड़े किए, बल्कि उसके समाधान के मार्ग भी दिखाए। उन्होंने कहा कि अभाविप की यात्रा परिवर्तन की यात्रा है। देश और समाज को रचनात्मक दिशा देने की यात्रा है।

मैं अभाविप का आर्गेनिक प्रोडक्ट : अमित शाह

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन अभाविप को बधाई देते हुए कहा कि अभाविप के अमृत वर्ष अधिवेशन में हिस्सा लेना, उनके लिए आनंद का विषय है। यह अधिवेशन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका आयोजन अभाविप के अमृत वर्ष में किया जा रहा है। साथ ही यह भारत की स्वतंत्रता के अमृत काल में प्रवेश करने वाला अधिवेशन भी है।देश ने जब अमृत वर्ष को मनाया तो विश्व ने भी भारत का लोहा माना। अमृत काल में भारत की संस्कृति को गौरव दिलाने के हो रहे प्रयास को सभी देख रहे हैं। संबोधन के दौरान गृहमंत्री अमित शाह बेहद भावुक दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि वह राष्ट्रीय अधिवेशन के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर कितना गौरवान्वित महसूस कर रहा हैं, यह वह नहीं बता सकते। यह अनुभव वही व्यक्ति कर सकता है, जिसकी शुरुआत राजकोट अधिवेशन में पंडाल के अंत में बैठकर हुई और अब वह मुख्य अतिथि बनकर यहां खड़ा है। वह स्वयं अभाविप के आर्गेनिक प्रोडक्ट हैं।

उन्होंने कहा कि ज्ञान, शील, एकता के मंत्र के साथ एक पथ का निर्माण करके हर चुनौतियों से संघर्ष करने वाले अभाविप का इतिहास स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाएगा। संघ के पूर्व सहसरकार्यवाह एवं अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री स्वर्गीय मदनदास देवी, प्रा. यशवंत राव केलकर, बाल आप्टे, दत्ताजी डिडोलकर, नारायण राव भंडारी जैसे लोगों ने देशभर के छात्रों को

अभाविप से जोड़ा। 1949 से लेकर 2023 तक की यात्रा देश के विकास के साथ जुडी हुई है। अभाविप ने युवाओं के माध्यम से शिक्षा और संस्कृति से स्व का विचार बताया।लेकिन अब ऐसा समय है, अब संघर्ष नहीं, बल्कि काम करने की आवश्यकता है। अभाविप कार्यकर्ताओं को यह संकल्प लेना चाहिए कि 2047 में जब अपनी स्ववतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, उस समय भारत हर क्षेत्र में प्रथम और विश्व में सबसे आगे होगा।ज्ञान-शील-एकता के पथ पर चलते हुए अभाविप ने लाखों अच्छे नागरिक देश को दिए हैं। अभाविप एक संस्था नहीं हैं, बल्कि राष्ट्र पुनर्निर्माण का आंदोलन है। अधिवेशन में आए युवा यह संकल्प लेकर जाए कि भारत को हर क्षेत्र में प्रथम बनाना है।

मुद्दों से समझौता नहीं करते अभाविप कार्यकर्ता : याज्ञवल्क्य शुक्ल

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने परिषद के विभिन्न आंदोलनों का उल्लेख करते हुए कहा कि मुझे लगता है कि अभाविप एक ऐसा आंदोलन है, जो देश के अंदर सकारात्मक परिवर्तनों के आधार पर राष्ट्रीयता के अनुकूल संकल्प लेकर नौजवानों को कैंपस के अंदर खड़ा करने का काम करती है। विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता मुद्दों पर समझौता नहीं करते हैं। अभाविप ने रचनात्मक तरीके से इस देश में आंदोलनों की शृंखला खड़ी की है।

गृहमंत्री अमित शाह ने जारी किया अभाविप का थीम सांग

राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में अधिवेशन का थीम सांग गृहमंत्री अमित शाह द्वारा जारी किया गया। थीम सांग के बोल बोल जागीरदार आरवी और पुष्कर राज तिवारी ने लिखे हैं और इसे रविंद्र उपाध्याय ने अपने एक सहयोगी के साथ मिलकर गाया है। थीम सांग में अभाविप की विकास यात्रा को बताया गया है।

8500 छात्रों ने एक साथ किया वंदे मातरम का गान

अधिवेशन के पहले दिन अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजशरण शाही एवं राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ला ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर अधिवेशन में हिस्सा लेने के लिए हजारों कार्यकर्ता उपस्थित थे। सायंकाल हुए ध्वजारोहण कार्यक्रम के बाद अधिवेशन स्थल पर अभाविप का लहराता ध्वज, संगठन के उत्साह, कार्यों एवं प्रतिबद्धता को प्रदर्शित कर रहा था। ध्वजारोहण के बाद 8500 विद्यार्थियों ने एक साथ वंदे-मातरम का सामूहिक गान किया। वंदे मातरम गान के

दौरान 150 दृष्टिबाधित दिव्यांग विद्यार्थियों के समूह द्वारा तिरंगे की रचना भी बनाई गई। यह दृश्य देखकर सभी अभिभूत थे।

आकर्षण का केंद्र रहा ड्रोन शो

राष्ट्रीय अधिवेशन के तीसरे दिन रात्रि में ड्रोन शो का आयोजन किया गया । यह ड्रोन शो जहां अभाविप कार्यकर्ताओं के लिए आकर्षण का केंद्र रहा, वहीं स्थानीय नागरिक भी ड्रोन शो को देखकर अचंभित हो गए । ड्रोन शो में स्वामी विवेकानंद, अभाविप के पूर्व संगठन मंत्री स्वर्गीय मदन दास देवी ओर अभाविप के पूर्व अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर का चित्र तो बनाया ही गया, साथ ही आसमान में अमृत महोत्सव वर्ष, अधिवेशन की 69 संख्या ओर इंद्रप्रस्थ नगर के दृश्य भी दर्शाए गए। छात्र शक्ति का प्रदर्शन नारा लिखने के साथ जब ड्रोन ने भारत माता की जय लिखा तो पूरा अधिवेशन स्थल भारत माता की जय के उद्घोष से गूंज उठा । अंत में ड्रोन ने भारत माता की तस्वीर बनाई ओर फिर कमल के फूल का आकार बनाने के साथ ही ड्रोन शो समाप्त हो गया ।

दत्ता जी डिडोलकर की स्मृति में लगाई गई प्रदर्शनी

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के ध्येय को स्पष्ट कराती है प्रदर्शनी : राज कुमार भाटिया

अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर को हर पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता अभाविप के रणनीतिकार के रूप में याद करता है। दत्ताजी से जुडी स्मृतियों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से इंद्रप्रस्थ नगर में एक भव्य प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन गत 7 दिसंबर को अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री प्रा. राजकुमार भाटिया ने किया। उद्घाटन समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार, राष्ट्रीय मंत्री साक्षी सिंह, दिल्ली प्रांत सह मंत्री सार्थक शर्मा, दिल्ली प्रांत उपाध्यक्षा डा. सुमन मीणा सहित बड़ी संख्या में अभाविप कार्यकर्ता मौजूद रहे। आठ विषय और नौ हिस्सों में विभाजित प्रदर्शनी को देशभर के अलग-अलग शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों द्वारा तैयार किया गया । प्रदर्शनी में शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की 350 वीं वर्षगांठ पर उनकी शौर्यगाथा, विश्वगुरु भारत, स्वाधीनता का अमृत महोत्सव, अभाविप के विभिन्न आयामों और गतिविधियों द्वारा किए जा रहे कार्यों, दिल्ली का वास्तविक इतिहास, दिल्ली में हुए प्रमुख छात्र आंदोलन एवं अभाविप के 75 वर्षों की ध्येय यात्रा को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद पूर्व अध्यक्ष प्रा. राजकुमार भाटिया ने कहा कि अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर का जीवन देश एवं युवाओं के उत्थान तथा शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के प्रति समर्पित रहा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक होने के साथ ही उन्होंने भारत की संस्कृति को जागृत रखने के विभिन्न प्रयासों में सक्रिय योगदान दिया। यह प्रदर्शनी अभाविप के विभिन्न क्रियाकलापों के द्वारा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के ध्येय को स्पष्ट एवं लघु भारत का दर्शन कराती है। इस अवसर पर प्रदर्शनी का कार्य करने वाले छात्र मूर्तिकारों को सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार ने कहा कि दिल्ली ने बहुत कुछ देखा है। आज देश अपने अमृतकाल को हर्षोल्लास से मना रहा है और अभाविप का भी अमृत काल है। अभाविप के सभी कार्यकर्ता इसके साक्षी और बधाई के पात्र हैं। अभाविप जिस उद्देश्य को लेकर चली थी, वह पूरे होते नजर आ रहे है, जिनमें धारा-370 ,राममंदिर निर्माण, राष्ट्र समर्पित राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि उल्लेखनीय कार्य पूरे होते जा रहे हैं। ■

भारतीय संस्कृति को दर्शाती दत्ताजी स्मृति प्रदर्शनी

राष्ट्रीय अधिवेशन में अभाविप के पूर्व अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर की स्मृति में आयोजित प्रदर्शनी ने भारतीय संस्कृति एवं इतिहास से व्यापक रूप से अवगत कराया। प्रदर्शनी में राष्ट्रीय एकात्मता दीर्घा ने राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के विभिन्न प्रतीकों को समायोजित करते हुए दत्ताजी के विषय में विभिन्न चित्रों के माध्यम से सामने रखा गया। प्रदर्शनी में दिल्ली के इतिहास से संबंधित दीर्घा, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के महाभारत काल से लेकर अब तक के इतिहास का बिंदुवार सचित्र एवं सजीव दर्शन तो कराया ही, साथ ही इस दीर्घा के माध्यम से यह भी प्रदर्शित किया गया कि किस प्रकार राष्ट्रीय गौरव के विभिन्न प्रतीकों के इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करके लोगों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया गया। वहीं मध्यकाल में विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध प्रतिरोध में दिल्ली एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरी। स्वाधीनता आंदोलन के अंतर्गत दिल्ली में हुई महत्वपूर्ण क्रांतिकारी गतिविधियों की रोचक जानकारी इस दीर्घा के विभिन्न चित्रों से प्राप्त हुई। इस दीर्घा में स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अमृत काल तक की यात्रा भी कलाकृतियों में परिलक्षित हुई। विश्वगुरु भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित दीर्घा में भारत के ज्ञान-विज्ञान, खेल, खगोल की समृद्ध परम्परा और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रणेता शुश्रुत, कणाद, पतंजलि, पाणिनी, आर्यभट्ट एवं वराहमिहिर जैसे मनीषियों के जीवन वृत्त को प्रदर्शित किया गया। इसी तरह हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की 350वी वर्षगांठ पर छत्रपति शिवाजी महाराज के संपूर्ण जीवनवृत को कलाकृतियों द्वारा प्रदर्शित किया गया। इस दीर्घा में उनके जन्म से लेकर एक साम्राज्य की स्थापना के पीछे के व्यापक संघर्ष और स्वराज्य की भावना पर कुठाराघात करने वाले शत्रुओं से लोहा लेने का सजीव चित्रण था। इसके साथ ही अभाविप की विभिन्न आयाम कार्य गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलक भी प्रदर्शनी में देखी गई। पुरातात्विक उत्खनन में प्राप्त रथ, मानगढ़ एवं जी-20 आदि से संबंधित मॉडल अपनी जीवंतता एवं कलात्मक सुंदरता के कारण सभी को आकर्षित करने में सफल रहे। ■

प्रस्ताव

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं जीवंत परिसर हेतु उठाए जाएं ठोस कदम

उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षा का विकास एवं उसका मूलस्रोत शैक्षिक परिसरों को जीवंत बनाने हेतु गंभीर प्रयासों की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही है। आधारभूत संरचना, उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण व रोजगारपरक शिक्षा का अभाव, नीरस अध्यापन पद्धति और शिक्षकों की कमी उच्च शिक्षा क्षेत्र में व्यापकपरिवर्तन होने में बाधा साबित हो रहे हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का स्पष्ट मत है कि शिक्षा को सस्ती, सुलभ, गुणवत्तायुक्त बनाने के साथ कौशलयुक्त और व्यावहारिक बनाना भी आवश्यक है। पाठ्यक्रमों और परिसर में तकनीकी नवाचारों को शामिल करते उसे युगानुकुल और विश्वस्तरीय बनाने के लिए गंभीर प्रयास होने चाहिए। साथ ही साथ पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थियों में वास्तविक जीवन कौशल का विकास तथा चरित्र निर्माण करे। परिसर में छात्रों की सहभागिता बढ़ाने के लिए शोध, सर्वेक्षण, समूह चर्चा, प्रयोग एवं प्रायोगिक, प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप), कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे नवाचारों को शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है। हमें एक ऐसी परिसर संस्कृति विकसित करनी है, जहां अकादमिक वातावरण के साथ-साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय चरित्र निर्माण हो तथा शिक्षक छात्र संवाद के माध्यम से विद्यार्थी अपने भविष्य के लिए उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सके। कला, खेल, योग, सेवा और पर्यावरण जैसी गतिविधियों के माध्यम से परिसर न केवल जीवंत बने, अपितु विद्यार्थी संवेदनशीलता के साथ अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों की ओर सजग भी बनें। इस पूरी प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करने में छात्रसंघों की बड़ी भूमिका है और अभाविप का मत है कि देश के सभी शैक्षणिक संस्थानों में छात्रसंघ चुनावों का आयोजन कर लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की जानी चाहिए।

अभाविप का 69वां राष्ट्रीय अधिवेशन देश के शैक्षिक समुदाय, विशेषकर परिसरों के चुने हुए छात्र प्रतिनिधियों का आह्वान करता है कि छात्रों की रुचि परिसर में बढ़ाने हेतु अभियान लें। अभाविप शैक्षणिक संस्थानों से भी अपील करता है कि आनंदमयी, सार्थक विद्यार्थी जीवन निर्माण हेतु गुणवत्तापूर्ण, रुचिकर परिसर निर्माण को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता में सम्मिलित करें और इस दिशा में ठोस कदम उठाएं। ■

विद्यार्थी परिषद ने रचा नया इतिहास
सदस्यता हुई 50 लाख के पार

इंद्रप्रस्थ नगर, दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 69 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान महामंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए अभाविप राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि विद्यार्थी परिषद ने ने अपने पूर्व के सभी कीर्तिमानों को ध्वस्त करते हुए नया कीर्तिमान रचा है। विद्यार्थी परिषद की सदस्यता 50 लाख पार कर चुकी है। अब तक प्राप्त आंकड़े के अनुसार इस वर्ष परिषद की सदस्यता 50 लाख, 53 हजार 7 सौ 82 हुई है, जो अब तक की अधिकतम संख्या है।

प्रतिवेदन प्रस्तुति के दौरान वर्ष 2022-23 के आंकड़े को बताते हुए उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस अर्थात अभाविप के स्थापना दिवस पर संपूर्ण देश में 4333 स्थानों पर 7193 विविध कार्यक्रम हुए, जिसमें 62 हजार से अधिक छात्र-छात्राओं ने सहभाग लिया। विद्यार्थी दिवस के उपलक्ष्य पर पौध रोपण, युवा महोत्सव, मशाल यात्रा, कोरोना वॉरीयर सम्मान, श्रेष्ठ विद्यार्थी सम्मान जैसे विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी तरह डा. भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस (6 दिसंबर) को देश भर के साढ़े तीन हजार से अधिक स्थानों पर कार्यक्रम किए गए जिसमें लगभग 63 हजार विद्यार्थी सहभागी रहे।

स्वामी विवेकानंद जयंती (12 जनवरी) से लेकर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती (23 जनवरी) के बीच अभाविप युवा पखवाड़ा के रूप में मनाती है, इसके तहत देश भर में छात्र संवाद, मैराथन, रक्तदान शिविर, रंगोली, भाषण प्रतियोगिता जैसे अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष युवा दिवस के अवसर पर कुल 4462 इकाईयों के 5958 स्थानों पर कार्यक्रम हुए, जिसमें 87 हजार से अधिक लोगों की सहभागिता रही। जनजाति गौरव दिवस के उपलक्ष्य पर अभाविप द्वारा देश भर में विविध कार्यक्रम आयोजित कर जनजातीय महनायकों की गौरवगाथा से वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराया गया। इसी प्रकार स्त्री शक्ति दिवस (महारानी लक्ष्मीबाई जयंती 19 नवंबर) के उपलक्ष्य पर संपूर्ण देश में कार्यक्रम आयोजित हुए, जिसमें 62 हजार से अधिक विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

अभाविप अमृत महोत्सवी वर्ष पर देश भर में एक दिवसीय जिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। परिषद दृष्टिकोण के 886 जिले में से 597 जिले के 3394 इकाईयों के 5678 स्थानों से 73375 की संख्या में छात्र-छात्राओं की सहभागिता रही। देश के शहरी क्षेत्र से लेकर सुदृढ़ ग्रामीण परिवेश के जिलों में भव्य रूप से जिला सम्मेलन आयोजित हुए।

अभाविप अपनी ध्येय यात्रा के 75 वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। इस ध्येय यात्रा को स्मरण कराने एवं ध्येय यात्रियों की मधुर स्मृतियों को साझा करने के उद्देश्य से देश भर में अमृत महोत्सव समारोह का आयोजन किया जा रहा है। अभाविप राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि अभी तक प्राप्त आंकड़े के अनुसार 25 प्रांतों के 539 जिलों की 1648 इकाईयों की 395 संपर्क केन्द्रों पर समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 19 हजार से अधिक लोगों की सहभागिता रही। रानी दुर्गावती की 500 वीं जयंती पर देशभर में एक अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किए गए। आंकड़ों की बात करें तो देश भर में आयोजित कार्यक्रमों में 86 हजार से अधिक विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

अभाविप द्वारा इस वर्ष प्रांत वार विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जिसके तहत दक्षिण तमिलनाडु में शक्ति संगम, आंध्र प्रदेश में नशामुक्त रैली, कोंकण में कांस्टीट्यूशन क्लब अभ्यास मंडल, छात्र सत्ता, छत्तीसगढ़ में रगोत्सव, दक्षिण बंगाल में स्टूडेंट कॉन्क्लेव, बांग्ला भाषा दिवस, अरुणाचल में अरुणोदय, झारखंड में हूल क्रांति दिवस, उत्तरांचल में प्रतिभा सम्मान समारोह, हिमाचल में निरवधि, पश्चिम महाराष्ट्र में उद्यमिता विकास यात्रा, मराठवाड़ा मुक्ति संग्राम यात्रा, कोंकण प्रांत के गोवा में यूथ लीडर

समिट, विदर्भ के नागपुर में छात्र नेता सम्मेलन, बिहार प्रांत में सर्जना निखार शिविर, काशी प्रांत में छात्र नेता सम्मेलन, मुंबई में राष्ट्रीय छात्र फिल्म महोत्सव, जम्मू-कश्मीर में क्रांति तीर्थ जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव एवं अभाविप के 75 वें वर्ष के अवसर पर 1 फरवरी से 20 फरवरी के मध्य राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा-2023 का आयोजन किया गया जिसमें पूर्वोत्तर के सात प्रांतो के 86 जिलों से 460 सील प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इन प्रतिनिधियों में 81 विभिन्न जनजाति समूह के छात्र-छात्राएं सम्मिलित हैं। सील प्रतिनिधियों को 16 अलग-अलग समूह में विभाजित कर शेष भारत के 22 राज्य के 64 स्थानों पर राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा आयोजित की गई। सील (1966-अब तक) इतिहास में अब तक सबसे बड़े दल, इस राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा के दौरान सम्मिलित हुई, देश भर के 64 शहरों के 960 परिवारों में पूर्वोत्तर के प्रतिनिधियों ने निवास किया।

परिषद में आंदोलन का बहुत महत्व है। अभाविप द्वारा वर्ष भर शैक्षिक परिसरों के विभिन्न समस्याओं को लेकर आंदोलन किया जाता रहा है। केरल में कन्नूर में एक छात्रा को जब एसएफआई के द्वारा बंधक बना लिया गया तो अभाविप ने प्रांत भर में अपराधियों पर कार्रवाई की मांग को लेकर प्रदर्शन किए। वहीं आंध्रप्रदेश में विकराल होती स्कूली शिक्षा समस्या को लेकर 5 जुलाई को एक दिवसीय स्कूल बंद आह्वान किया गया, जिसमें 350 स्थानों पर 30 हजार से अधिक स्कूल बंद हुए। तेलंगाना में अभाविप के आह्वान पर युवाओं को रोजगार देने, फीस विनियम एक्ट लागू करने, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन, शुल्क प्रतिपूर्ति तथा छात्रवृत्ति बकाया जैसी मांग को लेकर सिकंदराबाद के परेड ग्राउंड में कदनाभेरी सभा का आयोजन किया गया जिसमें 33 जिलों के 86 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। उत्तर कर्नाटक में शिक्षा नीति के लागू करने से राज्य सरकार के मना करने के विरुद्ध प्रांत स्तरीय धरना-प्रदर्शन एवं रैली का आयोजन किया गया, जिसमें 53 हजार से अधिक छात्रों ने भाग लिया। प. महाराष्ट्र प्रांत के सावित्रीबाई फुले विवि में विभिन्न शैक्षिक समस्याओं को लेकर प्रदर्शन किए। देवगिरी प्रांत में सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज में शुल्क वृद्धि करने विरुद्ध में आंदोलन किया गया, जिसमें छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। छत्तीसगढ़ लोकसेवा आयोग में फर्जीवाड़े एवं महिला उत्पीड़न के विरुद्ध 28 जिले के 101 स्थानों पर आंदोलन किए गए। 6 अक्टूबर को चलो रायपुर का नारा दिया गया और रायपुर में हजारों-हजार की संख्या में छात्रों ने भाग ली। अभाविप के इस आंदोलन ने राज्य सरकार की जड़े हिला दी। असम में विभिन्न शैक्षिक समस्याओं को लेकर आंदोलन किए गए। बिहार में शिक्षक बहाली में अनियमतता और भ्रष्टाचार को लेकर पूरे प्रदेश में एक दिवसीय सभी जिला मुख्यालयों पर धरना-प्रदर्शन का आयोजन किया गया। चित्तौड़ प्रांत में शिक्षक भर्ती परीक्षा में पेपर लीक होने विरुद्ध, हस्ताक्षर अभियान, नुक्कड़ नाटक एवं आंदोलन आयोजित किए गए। जयपुर प्रांत में राजस्थान में बढ़ते बलात्कार, पेपर लीक, हिंसा के विरुद्ध न्याय पद यात्रा का आयोजन किया गया, मुख्यमंत्री आवास का घेराव किया गया। विभिन्न शैक्षिक मांगो को लेकर विभिन्न प्रांतों में मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल को ज्ञापन भी सौंपे गए।

सेवार्थ विद्यार्थी द्वारा बस्ती की पाठशाला के माध्यम से 14 प्रांतों में छात्रों को शिक्षा दी जा रही, जिसमें 85 सौ से अधिक छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। इसी प्रकार महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से देश भर में ऋतुमति अभियान चलाया जा रहा है। राष्ट्रीय कला मंच के द्वारा विभिन्न प्रांतों में कला महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जिससे छात्रों को अपनी प्रतिभा को दिखाने का मंच मिल रहा है। कोरोना के बाद कई विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में छात्र संघ चुनाव कराए गए। उत्तरांचल प्रांत के विभिन्न महाविद्यालयों में संपन्न हुए छात्र संघ चुनाव में अभाविप ऐतिहासिक जीत मिली है। आंकड़ों की बात करें तो 56, अध्यक्ष सहित 327 पदों पर अभाविप की जीत हुई है। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव में छात्रों ने पुनः अभाविप पर भरोसा जताया है। संपन्न हुए छात्रसंघ चुनाव में अध्यक्ष, सचिव एवं संयुक्त सचिव पदों पर रिकार्ड मतों से अभाविप की जीत हुई है। गोवा विश्वविद्यालय के 17 महाविद्यालयों में 12 महाविद्यालय के सभी पदों पर अभाविप ने जीत का परचम लहराया है। ■

विद्यार्थी परिषद का उद्देश्य राज करना नहीं बल्कि समाज बदलना है : आशीष चौहान

अभाविप : क्रांतिकारी छात्र आंदोलन' विषय पर अभाविप कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने कहा कि समाज क्षेत्र में बहुधा राजनीतिक दलों में किसी संगठन और पक्ष के कालांतर में कई टुकड़ो में विभाजित हो जाता, परन्तु विचारों की प्रतिबद्धता और चरित्रवान विद्यार्थी निर्माण का काम करनेवाली अभाविप आज अपने 75 वर्ष बाद भी मजबूती से विस्तृत होती जा रही है। यह 75 वर्ष की यात्रा समान्य यात्रा नहीं रही है।

श्री चौहान ने अभाविप की विकास यात्रा के बारे में बताया कि विद्यार्थी परिषद ने अपनी स्थापना के समय यह मांग उठाई थी कि हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी होनी चाहिए, राष्ट्र गीत वंदे मातरम् होना चाहिए, क्योंकि अपने देश के लिए मौलिक चिंतन करना है तो वह उस भाषा में होना चाहिए जो भाषा एक बालक अपने बचपन से सीखता है। भारतीय परिवेश का जो मौलिक विचार-चिंतन है, उसे समाज के सभी स्तरों तक सहजता से पहुंचाने हेतु हिंदी भाषा का आंदोलन परिषद ने खड़ा किया। हमारी यात्रा 'ध्येय यात्रा' है, यह घोषित है, किंतु हमारा उद्देश्य है सभी को साथ लेकर चलना और यही हमारी पारस्परिकता है। राष्ट्र हित के लिए जो भी निर्णय होगा वह सभी मिल कर करेंगे। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी परिषद का उदेश्य राज करना नहीं, बल्कि समाज बदलना है।

1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान जब दिल्ली की सत्ता ने अरुणाचल और असम की सुरक्षा को छोड़ दिया तब देश के दूसरे कोने से परिषद का एक प्राध्यापक पद्मनाभ आचार्य जी पूर्वोत्तर जाकर वहां से 71 विद्यार्थी को लेकर 'माय होम इंडिया' के अंतर्गत उन्हें मुंबई ले आए ताकि पूर्वोत्तर को यह न लगे की सरकार ने सुरक्षा छोड़ दी है। पूरा भारत पूर्वोत्तर के साथ है। सील का यह पहला कदम पूर्वोत्तर को अन्य भारत से जोड़ने वाली पहल की नींव साबित हुआ। सील ने देश के बीच उत्पन

संवाद हीनता को समाप्त किया। उन्होंने कहा कि देश की एकात्मकता में सील का विशेष योगदान है। पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों को भारत के अन्य भागों से जोड़ने का कार्य परिषद ने किया है, जिससे उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन आया। परिषद का सील प्रकल्प पांच दशक की अपनी विशेष यात्रा का गवाह है जो हमने भारत को जोड़ने के लिए शुरू किया।

हमारा दशकों-दशकों तक जुड़े रहना परस्परिकता है। विद्यार्थी परिषद ने सूचना के अधिकार, अपनी भाषा में शिक्षा हो और वयस्क मताधिकार जैसे मुद्दों को उठाया जिन्हे बाद में सरकार द्वारा माना गया। प्रा यशवंत राव केलकर हमेशा कहते थे कि यह विद्यार्थी परिषद समाज के सभी क्षेत्रों को नेतृत्व देने का काम करती है। परिषद का यह सिद्धांत, यही बानगी है कि यह नए और पुराने दोनो को साथ में ले कर चलता है। विद्यार्थी परिषद की कार्यपद्धति प्रश्न से भागना नहीं बल्कि उनका उत्तर देना सिखाता है। परिषद 1971 में मतदान अधिकार के उम्र कम करने को लेकर आंदोलन शुरू करती है और वो 1986 में पूरा हुआ। परिषद दीर्घकालीन विचार कर

आंदोलन तय करती हैं।

आप परिषद में किसी भी दायित्व में है, प्रश्न आपके पास बंदूक की गोली की तरह आएगा और आप उस प्रश्न से बच कर के भाग नहीं सकते। परिषद कार्यकर्ता को डायरी के माध्यम से स्मृतियों से जोड़ी रखती हैं। 1968 में परिषद का दायित्व लेने वाला कार्यकर्ता आज भी अपने को एबीवीपी से जुड़ा हुआ मानता है।

अभाविप की विकास यात्रा पर आधारित ध्येय यात्रा पुस्तक का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह केवल पुस्तक नहीं, बल्कि वह परिषद की जीवनी है। हमारी यात्रा ध्येय यात्रा है, यह घोषित है, किंतु हमारा उद्देश्य है सभी को साथ लेकर चलना और यही हमारी पारसपरिकता है। राष्ट्र हित के लिए जो भी निर्णय होगा वह सभी मिल कर करेंगे।

विकासार्थ विद्यार्थी के माध्यम से हम दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के उस विचार और चिंतन को आईआईटी परिसर तक लेकर जाते हैं जो साम्यवाद और पूंजीवाद से भिन्न एक अलग विचार को प्रोत्साहित करता है। विद्यार्थी परिषद ने सूचना के अधिकार, अपनी भाषा में शिक्षा का और वयस्क मताधिकार जैसे मुद्दों को उठाया जिन्हे बाद में सरकार द्वारा माना गया।

परिषद 1971 में मतदान अधिकार के उम्र कम करने को लेकर आंदोलन शुरू करती और वह 1986 में पूरा हुआ। परिषद दीर्घकालीन विचार कर आंदोलन तय करती हैं। कश्मीर फाइल्स को लेकर उसे कर मुक्त करने पर जब सवाल उठा तब अभाविप के कार्यकर्ता रहे हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने कहा था कि मैं फ़िल्म में दिखाए गए घटनाओं का साक्षी रहा हूं। इस फिल्म में कश्मीर के पीड़ितों को आवाज देने का काम किया। ■

प्रस्ताव

नारी शक्ति वंदन अधिनियम : एक ऐतिहासिक पहल

राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए लाए गए "नारी शक्ति वंदन अधिनियम-2023" का भारतीय संसद में पारित होना न केवल जन आकांक्षाओं की पूर्ति है, अपितु महिला नेतृत्व विकसित करने की दृढ़ इच्छाशक्ति की परिणति है। अभाविप की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद "नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023" का स्वागत एवं वर्तमान केंद्र सरकार का अभिनंदन करती है।

अगर इतिहास की ओर देखें तो राजमाता अहिल्याबाई, रानी दुर्गावती जैसी शासिकाओं ने अपने कुशल शासन के माध्यम से जनमानस के ऊपर अपनी अमिट छाप अंकित की। स्वातंत्र्य समर में भी रानी लक्ष्मीबाई, रानी चेन्नमा, दुर्गा भाभी और रानी गाइदिन्ल्यू जैसी अनेक वीरांगनाओं का उल्लेखनीय योगदान देखने को मिलता है, परंतु स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्र के नीति निर्धारण में महिला सहभाग कम दिखाई देता है।

महिलाओं के लिए राजनीति में समान अवसर के अभाव के कारण राजनीतिक पक्षों में कार्यकर्ता स्तर पर महिलाओं की संख्या में वृद्धि तो है, किन्तु उम्मीदवार तथा नेतृत्व के स्थान पर अपेक्षित सहभाग नहीं है। पंचायती राज में 33 प्रतिशत आरक्षण के कारण महिला सहभाग में बढ़ोत्तरी हुई परंतु सरपंचपतिवाद, जातिवाद, अर्थप्रलोभन तथा बाहुबलियों के प्रवेश के कारण महिलाएं अपना सक्रिय योगदान नहीं दे पा रही हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, "संसद के साथ-साथ विधान सभा और विधान परिषद में भी महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण" की "रा.का.प. गुवाहाटी (2018)" में उठाई मांग को दोहराते हुए "नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023" के प्रामाणिक क्रियान्वयन हेतु आशान्वित है। ■

बदल रही हैं भारत की वैश्विक भूमिका : मुकुंद सीआर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के अमृत महोत्सवी वर्ष में आयोजित 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत एवं उसकी भूमिका' विषय पर अपने विचार रखते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मुकुंद सीआर ने कहा कि वर्तमान में दो मुद्दों पर भारत को देखने की आवश्यकता है। इनमें पहला है- हमारा दुनिया के सामने परिदृश्य और दूसरा है विश्व के समक्ष हमारी भूमिका। उन्होंने कहा कि एक देश को अर्थव्यवस्था की दृष्टि से समृद्ध किया जा सकता है, लेकिन इसकी सांस्कृतिक पहचान, उसकी भूमिका के लिए बहुत महत्व रखती है।

भारत के परिदृश्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आज विश्व का परिदृश्य भारत के बारे में क्या है? इस पर विचार किया जाए तो विश्व बहुध्रुवीय दिखाई देता है। एक समय था जब अमेरिका और रूस के मध्य सत्ता की लड़ाई चलती थी, लेकिन सोवियत यूनियन जब ख़त्म हुआ, तो उसके बाद अमेरिका शक्तिशाली बना। लेकिन तब चीन भी शक्तिशाली बना। लेकिन अब अमेरिका पहले जितना शक्तिशाली नहीं रहा, सोवियत यूनियन जैसा रूस भी नहीं है और विश्व अब शायद असंतुलित भी नहीं रहा। अब दुनिया बहुध्रुवीय है और इस वातावरण के अग्र नामों में भारत का नाम है।

भारत की भूमिका के विषय में उन्होंने कहा कि भारत की अर्थशक्ति, सैन्यशक्ति और कूटनीतिक शक्ति बढ़ी है, लेकिन भारतीय समाज में ऊंच-नीच आज भी है। आज भी सबके लिए पानी पीने के लिए कुआं अलग है, समाजों के मंदिर अलग है, अंतिम क्रिया के लिए श्मशान अलग है । ऐसे में ध्यान आता है कि केवल विकास से देश ठीक नहीं होगा। अगर विश्व में हमारा स्थान ठीक बनाना है तो समाज में बहुत अंदर तक के सुधार आवश्यक है और इसके लिए बहुत काम बाकी है। इन विषय में युवाओं को ध्यान दिलाते हुए उन्होंने कहा दुनिया डिजिटल परिवर्तन के साथ ऊर्जा परिवर्तन की ओर बढ़ रही है। अक्षय ऊर्जा (रिन्यूएबल एनर्जी) परिवर्तन, हरित ऊर्जा (ग्रीन एनर्जी) परिवर्तन के साथ साथ यह भी ध्यान में रखना होगा कि विवैश्वीकरण

(डीग्लोब्लाइजेशन) का परिवर्तन भी हमारी प्रभावी भूमिका के लिए बाधा बन सकता है। ध्यान दिया जाए तो उत्पादों की आपूर्ति के लिए पूरे विश्व की चेन चीन के पास है और दुनिया उस चेन को थोड़ा-थोड़ा प्रयास करके तोड़ने का काम कर रही है।

उन्होंने कहा कि हमें अपनी शक्ति बढ़ानी पड़ेगी और इसके लिए जनसांख्यिकी (डेमोग्राफिक) परिवर्तन को भी स्वीकार करना पड़ेगा। जनसांख्यिकी (डेमोग्राफिक) परिवर्तन दुनिया में है और उसका असर कई देशों में देखा जा सकता है। परंतु भारत चारों बदलावों में डिजिटल बदलाव, अक्षय ऊर्जा (रिन्यूएबल एनर्जी) एवं हरित ऊर्जा (ग्रीन एनर्जी) बदलाव, विवैश्वीकरण (डीग्लोब्लाइजेशन) का बदलाव और जनसांख्यिकी (डेमोग्राफिक) बदलाव की दृष्टि से सही दिशा में जा रहा है। इन चुनौतियों से हम बाहर आए हैं, परंतु धार्मिक (रिलीजियस) बदलाव की समस्या भारत में है, जो हम स्वीकार करते है, लेकिन उसमें भी हमें सुखद परिणाम मिलेगा। उन्होंने कहा कि आज भारत के युवा राष्ट्र निर्माण में स्वावलंबन जैसे कई कार्यों से अपना मन-धन दोनों लगा रहे हैं।

वैश्विक परिदृश्य को अभाविप प्रतिनिधियों के समक्ष रखते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया में आज चार एफ (F) का संकट हैं । Food, Fuel, Fertilizer, Fineness यह हम सभी को ध्यान में आता है। खाद्यान

संकट रूस और यूक्रेन युद्ध के दौरान कई देशों में खड़ा हुआ। आज दुनिया के 80 देशों में उर्वरक की वजह से संकट हैं। कई देश ईंधन के मूल्य से अपनी विदेश नीतियां बना रहे हैं, कई देशों में ईंधन के दाम भी बढ़ रहे हैं। विश्व के प्रमुख देश रूस और अमेरिका में बड़े-बड़े बैंक संकट में हैं तो वित्तीय संकट भी दुनिया में ध्यान में आता है। परंतु इन चार संकट से भारत कैसे बच गया तो पता चलता है कि इसके पीछे हमारी जनशक्ति है जो प्राकृतिक खेती, विद्युत चलित वाहन जैसे कई बदलावों से अपना दृष्टिकोण बदल रही है, परन्तु हमें और भी काम करने की आवश्यकता है।

उन्होंने भारत की भूमिका में सामाजिक संदेश को जोड़ते हुए अमेरिका के वोकिज्म का उदाहरण देते हुए कहा कि जो शक्ति व्यवस्थाओं से नहीं जुड़ पाती, वह शक्ति व्यय के काम में भी लग सकती है। भारत की समाज शक्ति ही भारत के विकास कल्याण के लिए जब चिंतित बनेगी तो भारत की भूमिका ज्यादा मजबूत बनेगी। भारत में स्वाभाविक युवा शक्ति ज्यादा है। यह चित्र 2025 तक देखने को मिलेगा, लेकिन उनके पास काम और उनकी बुद्धि में दृष्टि भी बहुत जरूरी है। उस युवा शक्ति को शारीरिक और मानसिक दृष्टि से सशक्त होना पड़ेगा। एशियाई खेलों में हमारे युवा खिलाड़ी मेडल जीतते हैं। उनकी शारीरिक दृष्टि देश का मान बढ़ाती है, परन्तु युवाओं को बुद्धि और मन से भी सशक्त होना पड़ेगा। स्मरण किया जाए तो दो हजार वर्ष के आक्रमण काल में हमारी गति धीमी हुई । पर आज भारत दुनिया में जा रहा है और हमें जाना भी चाहिए । यह भी ध्यान रखना होगा कि हमारा चरित्र और व्यवहार उस देश के लोगों का दिल जीतने वाला होना चाहिए। दुनिया के अलग-अलग देशों में हमारे देश के लोगों का प्रभाव बन रहा है उसके पीछे का कारण क्या है? उनका व्यवहार, उनका चरित्र, भारतीय आचरण का अनुसरण कर रहा है, वह चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या अर्थ क्षेत्र हो या शिक्षा क्षेत्र हो।

उन्होंने भारतीय मूल्यों की महत्वता का उल्लेख करते हुए कहा कि सनातन मूल्यों की स्थापना अगर करनी है तो युवाओं की एक विशेष भूमिका इसमें बन जाती है। ऐसे में ध्यान आता है कि आज की मूलभूत आवश्यकताएं क्या है? वह आवश्यकताएं बदली हैं और उसके अनुसार हमारी दृष्टि भी बदलनी चाहिए। युवा खाली कागज़ है । उनके मन में जो लिखेंगे, वह परिदृश्य बनेगा और यह युवा उसी डेमोग्राफिक डिविडेंड की युवा पीढ़ी है जो आज भारत को दुनिया मे विशेष बनाती है। ऐसे युवाओं के बीच हमें भारत की भूमिका रखनी है। राष्ट्र के बारे में सनातन मूल्यों के बारे में हमारी दृष्टि क्या है ? यह युवाओं को समझाना पड़ेगा। आज भारत की स्थिति दुनिया देख रही है । युवा पीढ़ी अगर संकल्प कर लेगी तो यह रिलीजियस परिवर्तन का संकल्प भी शुरू हो जाएगा । उसमें अगर कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है तो वह छात्र है और इसकी प्रमुख जिम्मेदारी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की बनती है। ■

श्रीराम प्राण प्रतिष्ठा समारोह

अभाविप के नेतृत्व में 22 जनवरी को विद्यार्थी मनाएंगे दीपोत्सव

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने उत्तर प्रदेश स्थित अयोध्या में आगामी 22 जनवरी को श्रीराम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर देश के विद्यार्थियों से दीपोत्सव मनाने का आह्वान किया है। अभाविप महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल के अनुसार के अनुसार यह अवसर देश के विद्यार्थियों को भगवान श्रीराम के आदर्शों को आत्मसात करने का संदेश देने वाला है। श्रीराम मंदिर निर्माण पर अभाविप ने अपनी राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में एक प्रस्ताव भी पारित किया है । ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

वन्देमातरम के नाद से गूंजा इंद्रप्रस्थ

अधिवेशन के तीसरे दिन इंद्रप्रस्थ नगर से लेकर दिल्ली विश्व विद्यालय तक अभाविप कार्यकर्ताओं की शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। बुराड़ी क्षेत्र से दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर जाने वाले मार्ग पर हजारों की संख्या में अभाविप कार्यकर्ताओं का समूह जब गुजरा, तो बड़ी संख्या में स्थानीय निवासी शोभायात्रा की भव्यता को देखने के लिए जुट गए। देश के हर राज्य से आए अभाविप कार्यकर्ता अपने-अपने राज्य की वेशभूषा में जब समवेत रूप से अभाविप का जयघोष कर रहे थे, तो सारा वातावरण गुंजायमान होने लगा। शाम लगभग चार बजे शुरू हुई शोभायात्रा में अभाविप के कार्यकर्ता पूरे जोश में थे कोई लाल पगड़ी बांधे था, तो कोई गुलाबी पगड़ी में था, कोई पीली पगड़ी बांध कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा था तो कोई राजस्थानी पगड़ी में । अपने-अपने राज्य की परम्परागत वेशभूषा में छात्राएं और छात्र शोभायात्रा में थे। कश्मीर से कन्याकुमारी, गुजरात से लेकर अरुणाचल प्रदेश, हर प्रदेश का प्रतिनिधित्व यह बता रहा था कि अभाविप को विश्व का सबसे बड़ा संगठन कहना गलत नहीं है। शोभायात्रा मार्ग में अभाविप के 44 प्रांतों की टोली एक के बाद एक करके गुजरी। "भारत माता की जय" "विद्यार्थी परिषद जिंदाबाद" के साथ ही "जय-जय श्रीराम" का घोष भी हर तरफ सुनाई दे रहा था। कार्यकर्ताओं के हाथों में तख्तियां "छात्र शक्ति-राष्ट्र शक्ति" को दर्शाने के साथ ही अभाविप की बढ़ती शक्ति के साथ "स्वाभिमान से ओत-प्रोत, यह भारत की तरुणाई है" का सन्देश सभी को सुना रही थीं। शोभायात्रा का नेतृत्व अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही एवं महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल के साथ अन्य पदाधिकारियों ने किया।

उत्तर-पूर्व के राज्य त्रिपुरा, नागालैंड, असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, सिक्किम राज्य के अभाविप कार्यकर्ता अपनी परंपरागत वेशभूषा में थे, जो कि समवेत स्वर में "भारत माता की जय" के उद्घोष के साथ बढ़ते जा रहे थे, वहीं कश्मीर से आई छात्राएं हिजाब में थीं और उन्हें भी "भारत माता की जय" का उद्घोष करने में कोई समस्या नहीं थी । दक्षिणी राज्यों में उत्तर तमिलनाडु, दक्षिणी तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश के साथ ही वामपंथी शासन वाले केरल राज्य के कार्यकर्ता भी अपनी-अपनी वेशभूषा में "भारत माता की जय" "वन्देमातरम" का उद्घोष करते हुए भारत की एकता को प्रदर्शित करते हुए दिखाई दिए । शोभयात्रा में अवध प्रान्त के समूह में "भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण" की वेशभूषा में

सबसे आगे चल रहे कार्यकर्ता जहां अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर के होने वाले उद्घाटन का संकेत दे रहे थे, वहीं पंजाब के कार्यकर्ता जोश के साथ "बोले सो निहाल, सतश्री अकाल" के साथ ही "एबीवीपी-शेरों की" के नारे लगाते हुए शोभायात्रा में जोश के साथ चल रहे थे। महाराष्ट्र, कोंकण, विदर्भ, देवगिरि प्रान्त के कार्यकर्ता अपनी-अपनी वेशभूषा में थे तो हिंदवी स्वराज यात्रा के रथ पर विराजमान छत्रपति शिवाजी महाराज सभी कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार कर रहे थे। छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा के समूह में शामिल कार्यकर्ता जनजातीय गौरव का अहसास कराते हुए दिखाई दिए, तो बिहार, कानपुर, काशी, गौरक्ष प्रान्त, उत्तर एवं दक्षिण बंगाल, उत्तरांचल, महाकौशल, मालवा, मध्य भारत, ब्रज, मेरठ, हिमाचल, हरियाणा प्रान्त के छात्र-छात्राएं पूरे जोश के साथ शोभायात्रा में शामिल हुए ।

अनुशासित रूप से शोभायात्रा मार्ग पर चलते हुए हजारों अभाविप कार्यकर्ताओं का स्वागत करने के लिए मार्ग में कई स्थानों पर मंच बनाए गए थे, जहां स्थानीय लोगों के साथ ही मुस्लिम जनता एवं बच्चे भी कार्यकर्ताओं पर पुष्पवर्षा करते हुए दिखाई दिए। जाति-धर्म का कोई भेदभाव कहीं भी नहीं था ओर सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत करने के लिए खड़े थे। कई स्थानों पर शोभायात्रा के स्वागत में पटाखे भी छुड़ाए जा रहे थे। "एक भारत-सक्षम भारत" की अवधारणा को साकार करने वाली शोभायात्रा किंग्सवे कैंप, जी.टी.बी नगर, पटेल चौक होते हुए दिल्ली विवि के नार्थ कैंपस जब पहुंची तो दिल्ली विवि छात्र संघ के पदाधिकारियों के साथ ही विश्वविद्यालय के सैकड़ों छात्र शोभायात्रा के स्वागत के लिए उमड़ पड़े लगभग चार किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा नार्थ कैंपस होते हुए मौरिस नगर चौराहे पर पहुंची तो स्थानीय नागरिकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गई । मौरिस नगर में शोभायात्रा का समापन हुआ और उसके बाद खुले अधिवेशन का आयोजन किया गया ।

खुले अधिवेशन में पाक अधिक्रान्त जम्मू-कश्मीर में तिरंगा फहराने का आह्वान

भव्य शोभायात्रा के बाद खुले अधिवेशन का आयोजन किया गया। मौरिस नगर चौक पर आयोजित खुले अधिवेशन में राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि भव्य शोभायात्रा राष्ट्र की अखंडता का शक्तिशाली प्रदर्शन है और विखंडनकारी षड्यंत्रों पर कड़ा आघात है। कश्मीर के लाल चौक पर तिरंगा फहराने का सपना अभाविप ने पूरा किया। अब बारी पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर की है। पाक अधिक्रान्त जम्मू-कश्मीर में तिरंगा लहराने से हम कुछ कदम दूर हैं ओर अभाविप इस सपने को भी साकार करेगी। अभाविप का कोई आंदोलन क्षणिक नहीं होता, जब तक सभी युवाओं का हित पूरा नहीं होता, तब तक अभाविप छात्रहितों के लिए लड़ती रहती है। खुले अधिवेशन को ओडिशा के विभाग स्वागत मंत्री (कालाहांडी) बुधदेव बाघ, असम के

प्रान्त मंत्री सीमान्ता कुमार, अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री हुश्यार सिंह मीणा, मेरठ प्रांत मंत्री क्षमा शर्मा, केंद्रीय कार्यसमिति सदस्य श्रवण (केरल) हिमाचल की शिल्पा कुमारी एवं दिल्ली प्रान्त मंत्री हर्ष अत्री ने भी सम्बोधित किया, जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष तुषार डेढ़ा ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। ■

प्रस्ताव

भारतीय 'स्व' एवं स्वाभिमान का प्रतीक श्रीराम मंदिर

श्रीराम जन्मभूमि पर निर्मित हो रहे भव्य मंदिर में रामलला की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा भारत की पौराणिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की पुर्नस्थापना के साथ ही विगत लगभग 500 वर्षों से चले आ रहे अनवरत संघर्ष की सफलता का प्रतीक है। अपनी मान्यता, आस्था और अगाध श्रद्धा के साथ कई पीढ़ियों ने अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए सदियों का समय ठीक उसी प्रकार व्यतीत किया है जिस प्रकार प्रभु ने वनवास काल का निर्वहण किया था। अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि शताब्दियों के संघर्ष का प्रतिफलन अयोध्या धाम में हम सभी को परिलक्षित हो रहा है।

श्रीराम मंदिर भारतीय जनमानस की आशा और आकांक्षा का मूर्त रूप है। सर्वोच्च न्यायालय की न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान करते हुए तथा उसके दिशा निर्देशों का पालन करते हुए भारतीय समाज ने जिस धैर्य और सहनशीलता का परिचय दिया है, वह हमें राम के जीवन से सीखने को मिलता है। इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित होने वाली परम पुनीत तिथि युगाब्द 5125, पौष शुक्ल द्वादशी (22 जनवरी 2024) को भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण और प्रभु श्रीराम की प्रतिमा की स्थापना, श्रीराम के आदर्श चरित्र द्वारा स्थापित सत्य, धैर्य, त्याग, संघर्ष तथा धर्म की विजय का भी सूचक है। यह भारतीय जनमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीरामचन्द्र के आदर्श चरित्र की अमिट छाप की भी विजय है, जो कोटि-कोटि भारतवासियों को गौरवान्वित हाने का सुअवसर प्रदान करती है।

हमारी पीढ़ी अत्यंत सौभाग्यशाली है जो भव्यता और दिव्यता से परिपूर्ण श्रीराम मंदिर का निर्माण होता हुआ देख रही है। भगवान श्रीराम के वनवास से वापस लौटने पर जैसी प्रसन्नता जनमानस को त्रेता युग में हुई थी, वैसी ही प्रसन्नता आज हमें भी हो रही है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की यह राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक युवा पीढ़ी से आह्वान करती है कि भगवान श्रीराम मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा के दिन हर्षोल्लास के साथ दीप जलाकर इस महान सांस्कृतिक जागरण के साक्षी और सहभागी बने। ■

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित किए गए शरद, लहरीबाई और डा. वैभव

शिक्षा, समाज, पर्यावरण, विज्ञान जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले युवाओं को प्रदान किए जाने वाले 'प्राध्यापक यशवंतराव केलकर' युवा पुरस्कार सम्मान समारोह 2023 का आयोजन 69वें अधिवेशन के अंतिम दिन किया गया। अबकी बार यह पुरस्कार 'कम आय एवं वंचित वर्ग के भारतीय युवाओं को वैश्विक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए शरद विवेक सागर (पटना, बिहार) को, श्रीअन्न (मिलेट्स) के संरक्षण व संवर्धन के मौलिक कार्य के लिए सुश्री लहरीबाई पडिया (डिंडोरी) को दिव्यांगों के जीवनस्तर को बेहतर और आत्मविश्वास युक्त बनाने के लिए डा. वैभव भंडारी (पाली, राजस्थान) को प्रदान किया गया। पुरस्कारस्वरूप तीनों विजेताओं को एक लाख रुपए की धनराशि, प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए।

विजन को एक्शन में परिवर्तित करने वाले व्यक्तित्व थे प्रा. यशवंतराव केलकर : राजशरण शाही

प्रा. यशवंतराव केलकर जीवन के बारे में परिचित कराते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने कहा कि प्रा. यशवंतराव केलकर जी का व्यक्तित्व विजन को एक्शन में परिवर्तित करने वाला रहा है। वैचारिक अधिष्ठान की विशिष्टता अभाविप की कार्यपद्धति की पहचान है। आज जिन तीन युवाओं को यह पुरस्कार मिला है, वह समाज में बेहतरी लाने का काम कर रहे हैं। प्रा. केलकर ने समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर करने वाले युवाओं को प्रेरित किया। उनकी स्मृति में दिया जाने वाला यह पुरस्कार प्रेरणा देगा।

पुरस्कार अर्पण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार रजत शर्मा के साथ ही अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, राष्ट्रीय अधिवेशन की स्वागत समिति के मंत्री राजीव बब्बर, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ की सचिव अपराजिता उपस्थित रहे।

क्या है प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार ?

प्रा. यशवंतराव केलकर की स्मृति में यह पुरस्कार 1991 से दिया जा रहा है। प्रा. केलकर को अभाविप का शिल्पकार कहा जाता है। अभाविप के संगठनात्मक विस्तार, सुदृढ़ीकरण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह पुरस्कार अभाविप और विद्यार्थी निधि न्यास की एक संयुक्त पहल है, जो छात्रों की उन्नति एवं शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के लिए प्रतिबद्ध है। पुरस्कार का उद्देश्य युवा सामाजिक परिवर्तनकारियों के कार्य को सामने लाना, उन्हें प्रोत्साहित करना और ऐसे सामाजिक उद्यमियों के प्रति युवाओं का आभार व्यक्त करना तथा युवा भारतीयों को सेवा कार्य के लिए प्रेरित करना है। ■

अभाविप ने संघर्षों से सामना करना सिखाया : रजत शर्मा

युवा पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि इंडिया टीवी के चेयरमेन रजत शर्मा ने संबोधन के दौरान रजत अभाविप में किए कार्यों के अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि अभाविप का जो सामान्य कार्यकर्ता था, जो गुमनाम था, उसे अभाविप ने संघर्षों का सामना करना सिखाया। विद्यार्थी परिषद के महत्वपूर्ण योगदान को याद करते हुए आपातकाल के दौरान विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में हुए छात्र आंदोलन के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी परिषद देश की चिंता करने वाला संगठन है। आज देश के 75 वर्षों की यात्रा में विद्यार्थी परिषद का भी अहम योगदान है। आज मैं जो कुछ भी हूं उसमें अभाविप का सर्वाधिक योगदान है। उन्होंने कहा कि इस संगठन से जुड़ी अपनी यात्रा में हमने कई पड़ाव देखे हैं। वैश्विक स्तर पर भारत का अपमान भी होते हुए देखा है और यशोगान भी देख रहे हैं। कभी आतंकियों द्वारा देश में खून खराबा भी देखा है और आज पाकिस्तान में डर के मारे आतंकियों को घर बदलते हुए भी देख रहे हैं। ये सब अभाविप की सामर्थ्य की वजह से संभव हुआ है।

अत्यंत समृद्ध तथा पोषणयुक्त रही है भारतीय आहार व्यवस्था : लहरीबाई पडिया

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद सुश्री लहरीबाई पडिया ने कहा कि यह पुरस्कार प्राप्त करके वह स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही हैं। मोटे अनाज हमारे पाचन तंत्र को स्वस्थ रखते हैं।हमें इसका उपयोग करना चाहिए। भारतीय आहार व्यवस्था अत्यंत समृद्ध तथा पोषणयुक्त रही है।हमारी पीढ़ी के युवाओं को स्वस्थ रहने के लिए अपना खान-पान ठीक रखना होगा।

पूर्व में मिले सभी पुरस्कारों से पृथक और पवित्र है यह पुरस्कार : शरद विवेक सागर

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद शरद विवेक सागर ने कहा कि अभाविप के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में मिला यह पुरस्कार उन्हें पूर्व में मिले सभी पुरस्कारों से पृथक और पवित्र है एवं यह पुरस्कार उनके लिए विशिष्ट है।

दिव्यांगता के संघर्ष को कभी आड़े नहीं आने दिया : वैभव भंडारी

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद डा. वैभव भंडारी ने कहा कि उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर दिव्यांगों के हितों से जुड़े विषयों को प्रमुखता से उठाया और अपनी दिव्यांगता के संघर्ष को कभी आड़े नहीं आने दिया। कठिन परिस्थितियों में संघर्ष किया, लेकिन हिम्मत कभी भी नहीं हारी। ■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद राष्ट्रीय पदाधिकारी (2023 -2024)	
राष्ट्रीय अध्यक्ष	डा. राजशरण शाही (लखनऊ, अवध)
राष्ट्रीय महामंत्री	श्री याज्ञवल्क्य शुक्ल (पटना, बिहार)
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	डा. पूनम सिंह (छपरा, बिहार)
	डा. प्रदीप कुमार (धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश)
	डा. सुदीप्तो मुखोपाध्याय (हावड़ा, दक्षिण बंगाल)
	प्रो. एम. नागलिंगम (कासरगोड, केरल)
राष्ट्रीय मंत्री	श्री वीरेन्द्र सोलंकी (इंदौर,मालवा)
	श्री मुस्तफा अली (श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर)
	श्री श्रवण बी.राज (भाग्य नगर)
	कु. शिवांगी खरवाल (दिल्ली)
	कु. शालिनी वर्मा (नर्मदापुरम)
	श्री बुद्धदेव बाघ (भवानी पटनम)
	श्री अंकित शुक्ल (अयोध्या)
	श्री राहुल राणा (धर्मशाला)
राष्ट्रीय संगठन मंत्री	श्री आशीष चौहान (मुंबई)
राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री	श्री प्रफुल्ल आकांत (दिल्ली)
	श्री गोविन्द नायक (कोलकाता)
	श्री एस. बालकृष्ण (भाग्यनगर)
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	श्री गीतेश सामंत (मुंबई)
राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष	श्री दयानन्द भाटिया (मुंबई)
केंद्रीय कार्यालय मंत्री	श्री दिगंबर पवार (मुंबई)
केंद्रीय सचिवालय सचिव	श्री देवानंद त्यागी (मुंबई)

वैश्विक कल्याणकारी भारतीय कूटनीति

भारत ने अपनी मेधा, कौशल, परिश्रम, सर्व समावेशी कल्याणकारी विचारधारा और कूटनीति से विश्व राजनीति में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। जी-20 शिखर सम्मेलन में भारत ने विश्व को अपनी एक संस्कृति में समाहित वैविध्यपूर्ण परंपरा एवं विरासत से परिचित कराया। भारतीय दृष्टिकोण 'वसुधैव कुटुम्बकम' की प्रतिध्वनि एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के विचार को संपूर्ण विश्व अंगीकृत कर रहा है। अफ्रीकी महाद्वीप के 55 देशों के संगठन अफ्रीकी संघ को जी-20 में स्थाई स्थायी सदस्य के रूप में शामिल कर निर्णायक समूह में लाने का कार्य तथा भारत द्वारा ऐसे वैश्विक मंचों पर 'सेवा','करुणा' और 'औद्योगिक परिवार की भावना' जैसे मूल्यों की चर्चा विश्वकल्याण के भाव का परिचायक है।

भारत प्रारंभ से ही आतंकवाद के सभी स्वरूपों के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। वर्तमान समय में हो रही घटनाएं जैसे हमास द्वारा इजराइल में आतंकी हमले तथा युक्रेन-रुस युद्ध आदि में भारत अपनी कूटनीति के माध्यम से विश्व कल्याण के लिए भूमिका निभा रहा है। आज जो भी देश आतंकवाद को शरण दे रहे है अथवा उसका प्रयोग कर रहे हैं, वह दुनिया में अलग-थलग पड़ते जा रहे है। कनाडा जैसे देश जो अपने देश में ख़ालिस्तानी गतिविधियों को अनदेखा कर रहे है, उनकी ओर विश्व संदेहास्पद दृष्टि से देख रहा है।

कोरोना काल में भारत ने 'वैक्सीन मैत्री' एवं दवाईयों की सहायता से मानवीय पीड़ा की अनुभूति और वैश्विक परिवार की भावना को अपने व्यवहार से प्रकट किया है। आर्थिक एवं राजनयिक सुदृढ़ स्थिति से आगामी समय में विश्व पटल पर भारतीय कूटनीति का बड़ा प्रभाव रहने वाला है। अभाविप का यह 69वां राष्ट्रीय अधिवेशन युवाओं से आह्वान करता है कि अंतर्राष्ट्रीय विषयों का अधिकाधिक अध्ययन कर वैश्विक मंचों पर अपनी भागीदारी बढ़ाते हुए वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार को प्रखरता से रखे। ■

प्रस्ताव

स्वस्थ जीवनशैली अपनाए युवा

दौड़ती दुनिया में आज युवा एक स्वस्थ जीवन जीने में समझौता कर रहा है। बदलती जीवन शैली के कारण युवाओं को कई प्रकार की स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। शारीरिक श्रम का अभाव, विवेकहीन आदतें और उच्च कैलोरी तथा कम पोषक तत्वों वाले खाद्य पदार्थों की युवाओं तक आसान पहुंच से मोटाप, हृदय रोग, रक्तचाप, मधुमेह और कैंसर जैसी स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो रही हैं तथा बढ़ती आयु के साथ इन समस्याओं का खतरा और भी बढ़ता जा रहा है। मानवीय संवेदन की कमी, प्रतिस्पर्धा में स्वयं को साबित करने का अत्यधिक दबाव तथा आत्मकेन्द्रित प्रवृत्ति मानसिक तनाव एवं अवसाद को जन्म दे रहीं है।

डिजिटल उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से नींद की समस्या, आंखों पर तनाव, भावनात्मक उन्माद और सामाजिक जुड़ाव में बाधा उत्पन्न हो रही है। नींद की कमी से दैनंदिन कार्य, मनोदशा तथा समग्र स्वास्थ प्रभावित हो रहा है, ऐसी समस्याओं से बचने के लिए, डिजिटल सीमाओं को मर्यादित कर प्रत्यक्ष वार्तालाप को बढ़ावा देना और स्वस्थ स्क्रीन आदतों को अपनाना होगा। 'रील और रियल'(Reel and Real) का अंतर समझते हुए मनोभाव व्यक्त करने के लिए समाधानकारी मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करना होगा तथा परिवार एवं मित्रों के संग आत्मीय संवाद को बढ़ाना होगा। युवाओं को स्वयं के व्यस्तम जीवन से एक कदम पीछे हटकर आत्मवलोकन करते हुए अपने समग्र कल्याण, विकास और भविष्य के अनुकूल आदतों को अपनाना होगा।

अभाविप का यह 69वां राष्ट्रीय अधिवेशन देश की युवाशक्ति से अव्यवस्थित दिनचर्या, असंतुलित भोजन, नशीले पदार्थों के सेवन छोड़ने, तनावमुक्त संतुलित आहार, ऋतुचर्या एवं दिनचर्या के साथ व्यायाम, खेल, योग एवं ध्यान को जीवन का अहम हिस्सा बनाते हुए स्वस्थ जीवनशैली अपना कर स्वयं के जीवन को देश और समाज के विकास में योगदान देने का आह्वान करता है। ■

विवेकशील विकास पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक

पर्यावरण के प्रति उदासीनता एवं भौतिकवाद की चकाचौंध और असंतुलित विकास ने प्रकृति को संकट में डाल दिया है। प्राकृतिक संरचना में हस्तक्षेप कर मानव ने भौतिक व्यवस्था खड़ी करने के प्रयास में आज हिमालय क्षेत्र में भूस्खलन और भूमि के कटाव को जन्म दिया है, जिसका उदाहरण आज उत्तराखण्ड, हिमाचल और सिक्किम में हुई घटना से देखने को मिलता है।

अनियोजित औद्योगिकरण एवं शहरीकरण के कारण नदियों का पानी दूषित हो रहा है तथा भूजल में भी हानिकारक तत्वों की मात्रा बढ़ी है। शुद्ध पेयजल की कमी के कारण मानव शरीर में नित नई व्याधियां जन्म ले रही हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण जीव-जंतुओं के साथ पेड़-पौधों की सैकड़ों प्रजातियां लुप्त हो रही है। ऐसे में समूचा विश्व समाधान की ओर देख रहा है, जिसकी दृष्टि 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' से मिलती है।

इमारती लकड़ी, आयुर्वेदिक औषधियां, पशुओं के लिए चारा के साथ ही देश की अर्थव्यवस्था वनों से प्राप्त कच्चे माल पर निर्भर होती है। आज बढ़ते प्रदूषण की मात्रा ने पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित किया है। कल-कारखाने, सड़कों और भवनों के अबाध निर्माण को विकास का पर्याय समझ लिया गया है। अतः विकास की इस धारणा को परिवर्तित कर हमें एकजुट होकर पर्यावरण का संरक्षण करना होगा।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन का यह अभिमत है कि पर्यावरण संतुलन हेतु वृहद वृक्षारोपण एवं जतन, जंगलों का बचाव, प्लास्टिक प्रबंधन, चिकित्सकीय अपशिष्टों का निराकरण, प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन, नगर वन संरचना एवं प्रदूषण कम करने जैसे प्रयोगों को आगे बढ़ाना होगा। पहाड़ी क्षेत्र में औद्योगीकरण के भिन्न मानक बनाने चाहिए। प्राकृतिक संपदाओं के शोषण से हाने वाले संभावित दुष्परिणाम के प्रति जागरूक कर संरक्षण हेतु संकल्पित होना चाहिए। ■

WEST BENGAL

ABVP Condemns Mamta Govt's Decision of Not Following UGC's Notice on M.Phil Discontinuation

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) strongly condemns the recent decision of the West Bengal government to defy the University Grants Commission's (UGC) Notice to discontinue M.Phil as a recognized degree by retaining the M.Phil program. This decision by the West Bengal government will lead to a disoriented educational future for students in West Bengal, potentially hindering their alignment with national standards.

The decision to persist with the M.Phil program in Bengal, against UGC Notice and national trends, signifies a lack of commitment from the state government towards ensuring educational parity. ABVP expresses concern that students in Bengal may face a disadvantage compared to peers in states where educational reforms adhere to national policies. The reported scams and irregularities within the West Bengal government's education sector are harming the educational future of the students.

ABVP National Secretary Shri Budhdev Bagh, stated, "ABVP supports the decision of UGC to discontinue the M.Phil degree in alignment with the progressive vision outlined in the National Education Policy (NEP-2020). We believe that the decision of the West Bengal government to defy UGC is regressive, undermining the academic potential of students in West Bengal. The decision of UGC to discontinue M.Phil as a recognized degree adheres to streamlined academic pathways, promoting a seamless transition for students from master's programs to research-intensive master's or PhDs." ■

(Rastriya Chatrashakti Team)

Rise in attacks and deaths in Pakistan

| K N Pandita |

Pakistan army in conjunction with its intelligence agency, the ISI, has sponsored several "non-state" terrorist organizations with the tacit objectives of keeping the flames of insurgency burning in the Indian part of J&K and decimating the non-conformist groups like the Shia, Ahmadi, and Hindu religious minorities. Major terrorist organizations like HuM, LeT, JeM, Lashkar-e Jhangvi or Labbaik have been active for decades with two of them (Let and JeM) focused on stoking the flames of anti-India propaganda through the power of the gun.

In its South & Central Asia Section, the Voice of America published on 31 December, a report about terrorist attacks in Pakistan during the past year. This report, as we shall see, entirely deals with a militant group outside the above-mentioned militant outfits of Pakistan. To generate a debate on terrorism in Pakistan, we shall first try to succinctly present the views expressed by the Voice of America in the report under consideration.

The report says that "militant" attacks across Pakistan killed around 500 civilians and a similar number of security forces in 2023, the highest number of fatalities the country has experienced in six years. The report says that northern Khyber Pakhtunkhwa and south-western Baluchistan provinces bordering Afghanistan accounted for most of the terror attacks and the resulting casualties.

The Pakistan military has reported the deaths of at least 265 officers and soldiers in nationwide militant attacks and counterinsurgency operations in 2023. In December, militants raided an army base in a north-western district and killed at least 23 soldiers in the deadliest attack in the country's recent history.

Who are the "militants"?

Khyber Pakhtunkhwa police says in its annual report that militant attacks claimed the lives of 185 police personnel last year. Police in Baluchistan also suffered fatalities but did not disclose the number. Pakistan says TTP and other fugitive militants have increasingly and freely carried across border terrorist attacks from sanctuaries in Afghanistan. Officials in Islamabad allege that Afghan fighters linked to the ruling Taliban in Kabul have also facilitated and participated in TTP-led assaults on Pakistani security forces and civilians.

While Islamabad is bringing the blame for supporting TTP to the doorsteps of Afghanistan, it also raises its finger toward the Indian intelligence agency RAW for clandestinely providing arms to the Baluch "insurgents". These accusations have been made for a long time.

While Islamabad and its army are vociferous about the terrorist activities of TTP and BLA, it is completely tight-lipped about the terrorist activities of the outfits it has raised for creating insurgency and mayhem in Jammu Kashmir. It does not speak of military operations in these two restive provinces and the atrocities committed by

the forces in North Waziristan where nearly 70,000 people were killed in cold blood by the Pak army according to its confession. The Pak army does not speak a word about the atrocities perpetrated against the Baluch nationalist forces, attacks, kidnappings, disappearances and the rest of it.

Terrorist regime

Very few people know that the creation of terrorist culture in Pakistan is the creation of its terrorist regimes mostly controlled by the army and its intelligence wing called ISI. We have already said that there are several terrorist organizations created, funded and supported by the Pakistan army with a set agenda which has political motives behind it. Pakistan has been looking for space eastward and westward. While it could not succeed in making any headway on its eastern border, it did indulge in blatant interference in the internal affairs of Afghanistan to its west.

Pakistan created the Taliban in 1996 with the motive of planting a regime in Kabul that would tow its line. The Taliban did capture power first in 1996 and then in 2019 but to the frustration of Pakistan the Taliban regime declined to tow the Pakistani line because the Afghan Taliban considered Pakistan a stooge of the US. The TTP is the by-product of the Taliban of Afghanistan.

Durand Line issue

The Pashtuns on either side of the Durand Line have always rejected the Durand Line drawn by the British colonial power. No government in Kabul, whether monarchy or popular, has accepted the Durand Line. But Pakistan, having inherited the colonial legacy of divide and rule, dictated that the people of Khyber Pakhtunkhwa accept the line, it forced the nationalist elements of the erstwhile NWFP, to begin armed resistance to the highhandedness of Pakistan. The TTP activists are kith and kin of the Afghan Taliban having the same language, culture, traditions, religion and lifestyle. How does Pakistan expect the Afghan Taliban to distance itself from TTP particularly when it fought shoulder to shoulder with the Taliban of Afghanistan in their war against NATO and the USA? It is a travesty that the Pakistani ISI, which helped the Taliban to come to power in Kabul, now accuses them of extending support and sympathy to the TTP.

Baluch identity

In the same strain, Baloch nationalist elements have risen in revolt against the discrimination and deprivation inflicted by the Punjabi army on them. The Baluch nationalists have risen against the Punjabi rulers and army looting their natural resources, especially gas. Atrocities against the Baluch nationalists have been adequately recorded and brought to the notice of the international community. To the rulers of Pakistan, they are "insurgents" and "terrorists''. The Pakistan army has led military operations against the Baluch community, and the Pakistan air force has bombarded their habitats at different times. The Baloch Liberation Army is fighting its battle for liberation from the clutches of Punjabi rulers.

Final analysis

Pakistan is only shedding crocodile tears when it cries that it is facing the terrorist onslaught. The reality is that the Pakistan army and the Pakistan government are the fountainhead of terrorism. There is deep resentment in the provinces in Pakistan plus POJK and GB against the parochial and authoritarian regimes in Islamabad. Pakistan is using muscle power to quill these uprisings which is a futile exercise. Pakistan has to accept its highhandedness and concede the rights accruing to people in the normal course of things. ■

जान बचाने की कोशिश पर विद्यार्थी परिषद के दो कार्यकर्ताओं को मिली जेल

जिला न्यायाधीश के तेवर से विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं में पैदा हुआ आक्रोश

भारत की न्याय व्यवस्था में अभी भी अंग्रेजी राज वाला प्रभाव देखा जा सकता है। वर्तमान समय में देश की न्याय व्यवस्था उन्हीं कानून, उन्हीं न्यायिक प्रक्रिया और उन्हीं तंत्र के अनुरूप है, जिसे अंग्रेजों की सत्ता ने अपने हितों को पोषित करने के लिए लागू किया था। यही कारण है कि न्याय व्यवस्था का संचालन करने वाले माननीय भारतीय समाज के सामने कुछ ऐसा प्रदर्शन करने से नहीं चूकते हैं, जो जनता के सामने उनके विशिष्ट अधिकार, विशिष्ट सोच और विशिष्ट प्रभाव को उजागर करता है। ऐसा ही कुछ उस समय भी हुआ, जब एक व्यक्ति की जान बचाने के लिए कुछ छात्रों ने समाज में विशेषाधिकार रखने वाले एक न्यायाधीश की कार को अपने कब्जे में ले लिया और अंतिम सांस लेने वाले व्यक्ति को अस्पताल ले जाकर उसके प्राण बचाने की कोशिश की।

घटना गत 10-11 दिसम्बर की रात्रि में हुई । दिल्ली में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में हिस्सा लेकर विद्यार्थियों का एक समूह दक्षिण एक्सप्रेस नामक रेलगाड़ी से ग्वालियर वापस आ रहा था । इसी रेलगाड़ी में मध्य प्रदेश के शिवपुरी स्थित पी. के. विश्वविद्यालय के कुलपति रणजीत सिंह यादव भी यात्रा कर रहे थे। यात्रा के दौरान 68 वर्षीय रणजीत सिंह की तबियत बिगड़ गई। उनके सीने में दर्द होने लगा और मुरैना पहुंचते-पहुंचते उनकी तबीयत ज्यादा खराब होने लगी, जिसे देखने के बाद अभाविप से सम्बंधित विद्यार्थियों के समूह ने उनकी मदद करने की कोशिश की। रेलगाड़ी में तैनात रेलकर्मियों के साथ ही रेलवे की हेल्पलाइन नंबर पर मदद मांगी। उन्हें मात्र यह आश्वासन दिया गया कि ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर सूचना भेज दी गई है, जहां उन्हें एम्बुलेंस उपलब्ध हो जाएगी।

ग्वालियर पहुंचने तक कुलपति रणजीत सिंह की स्थिति ख़राब होती चली गई, जिसके बाद विद्यार्थियों ने उन्हें ग्वालियर स्टेशन पर उतार लिया। साथ ही रेलवे अधिकारियों और रेलवे पुलिस से मदद मांगते हुए एम्बुलेंस को तत्काल बुलाने की मांग की क्योंकि सूचना होने के बाद भी वहां पर कोई एम्बुलेंस मौजूद नहीं थी। अकर्मण्यता एवं उदासीनता का उदाहरण का सजीव उदाहरण पेश करते हुए रेलवे अधिकारियों और रेलवे पुलिस ने जब कुछ नहीं किया तो सभी विद्यार्थी स्टेशन के बाहर आए और एक कार में रणजीत सिंह को लिटा दिया। कार चालक ने इसका विरोध किया और कार लेकर अस्पताल जाने से इंकार कर दिया। बाद में विद्यार्थी ने कार चालक को हटाकर स्वयं कार लेकर जेएएच अस्पताल पहुंच गए। लेकिन विद्यार्थियों के सभी प्रयास असफल हो गए। कुलपति रणजीत सिंह यादव को अस्पताल में भर्ती कराने से पहले ही मृत्यु हो गई।

इसी बीच ग्वालियर पुलिस सक्रिय हो गई। पुलिस की यह सक्रियता कुलपति रणजीत सिंह यादव को बचाने के लिए नहीं हुई थी, बल्कि उस कार के लिए हुई थी, जिस कार से बीमार कुलपति यादव को लेकर विद्यार्थी अस्पताल तक पहुंचे थे। यह कार उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश की थी, जिसके चालक ने कार को जबरन छीनकर ले जाने की सूचना पुलिस को जब दी तो पुलिस कार की तलाश में जुट गई। पुलिस को उक्त कार जेएएच अस्पताल के परिसर में मिली। कार चालक की रिपोर्ट के आधार पर डकैती-रोधी कानून समेत प्रासंगिक धाराओं में डकैती का मामला दर्ज करके विद्यार्थी परिषद के ग्वालियर सचिव हिमांशु श्रोत्रिय

और उप सचिव सुकृत शर्मा को गिरफ्तार करके 12 दिसम्बर को जेल भेज दिया गया।

मानव सेवा और किसी की जान बचाने के प्रयास के बदले विद्यार्थियों को डकैत बताने वाली पुलिस की रिपोर्ट के आधार पर डकैती मामलों के विशेष न्यायाधीश संजय गोयल ने अभाविप के ग्वालियर सचिव हिमांशु श्रोत्रिय (22) और उप सचिव सुकृत शर्मा (24) की जमानत याचिका यह कहते हुए खारिज कर दी कि कोई भी व्यक्ति विनम्रता से मदद मांगता है, ताकत से नहीं । किसी व्यक्ति की जान बचाने के ऐसे मामले में न्यायाधीश से ऐसे निर्णय और टिप्पणी की कल्पना किसी भी स्थिति में नहीं की जा सकती थी। ऐसे में अभाविप से जुड़े सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रारम्भ कर दिया। उधर विद्यार्थियों के अधिवक्ता भी मामले को लेकर उच्च न्यायालय पहुंच गए।

मामले की गंभीरता को देखते हुए मध्य प्रदेश के निवर्तमान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी सक्रिय हुए और उन्होंने प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रवि मलिमथ को एक पत्र लिखकर दोनों विद्यार्थियों को छोड़ने के लिए कहा। अपने पत्र में शिवराज सिंह ने कहा कि यह अलग तरह का अपराध है जो किसी की जान बचाने के लिए किया गया था। यह माफी देने लायक है क्योंकि दोनों विद्यार्थियों का उद्देश्य अपराध करने का नहीं था। इसलिए उनके भविष्य को ध्यान में रखते हुए उन्हें छोड़ देना जाना चाहिए। उधर प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने जांच के आदेश देते हुए पुलिस महानिदेशक से प्रश्न किया कि क्या इस मामले में डकैती से संबंधित भारतीय दंड संहिता की धाराओं के तहत मामला दर्ज करना उचित था? साथ ही मुख्यमंत्री यादव ने स्थिति को ध्यान में रखते हुए उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

इसके बाद मामले की सुनवाई उच्च न्यायालय में हुई। उच्च न्यायालय में जमानत याचिका पर सुनवाई होने के दौरान दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं ने अपना-अपना पक्ष रखा। दोनों पक्षों को सुनने और आरोपी विद्यार्थियों की केस डायरी देखने के बाद उच्च न्यायालय ने गत 18 दिसंबर को दोनों विद्यार्थियों को रिहा कर दिया। न्यायालय के आदेश के बाद दोनों विद्यार्थी जेल से बाहर तो आ गए, लेकिन इस सम्पूर्ण प्रकरण ने पुलिस और न्यायिक व्यवस्था पर जो प्रश्न खड़े किए हैं, उनका उत्तर गंभीरता से तलाशना ही होगा अन्यथा फिर कोई किसी की मदद के लिए आगे नहीं आएगा और कोई न कोई, सभी के सामने तड़प-तड़प कर अपने प्राण त्यागने के लिए बाध्य होगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

कुलपति की जान बचाने वाले कार्यकर्ताओं के साथ है अभाविप

ग्वालियर में रेलवे स्टेशन पर कुलपति की हृदयाघात से हुई मृत्यु की घटना अत्यंत दुखद है। उनकी जान बचाने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के कार्यकर्ताओं द्वारा ग्वालियर स्टेशन से अस्पताल तक जाने के लिए बिना अनुमति के न्यायाधीश की कार प्रयोग करने के लिए जीआरपी द्वारा मुकदमा किया जाना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। अभाविप के कार्यकर्ताओं ने कुलपति की जान बचाने के लिए जो भी संभव प्रयास किए जा सकते थे, वह करने का प्रयास किया। ऐसे कर्मनिष्ठ कार्यकर्ताओं पर मुकदमा दर्ज करना अत्यंत निंदनीय है। अपने कार्यकर्ताओं के साथ न्याय की मांग में अभाविप नेतृत्व साथ खड़ा है। अभाविप का मानना है कि किसी संकट में पड़े हुए व्यक्ति की जीवन रक्षा करना महान पुण्यकर्म है और यह वही कर सकता है जिसमें दृढ़ता एवं संवेदना दोनों हो। यह चरित्र अभाविप कार्यकर्ताओं की स्वाभाविक प्रकृति है, जिस चरित्र निर्माण के महायज्ञ में अभाविप 75वर्षों से लगा है। प्रोफेसर यादव की दुखद मृत्यु विचलित करने वाली है। अभाविप को अपने ऐसे कार्यकर्ताओं पर गर्व है। समाज के लिए सजगता से खड़े रहने वाले अपने कार्यकर्ताओं के लिए न्याय की मांग में अभाविप साथ खड़ी है।

वामपंथी सरकार के गुंडों से केरल के शैक्षणिक संस्थान त्रस्त

केरल के कालीकट विश्वविद्यालय सहित विभिन्न शिक्षण संस्थानों में सीपीआई (मार्क्सवादी) के छात्र संगठन स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) द्वारा लगातार अकादमिक स्वतंत्रता पर हमले, शैक्षणिक संस्थानों में छात्रों के साथ खूनी मारपीट, भ्रष्टाचार में लिप्तता तथा परिसर की स्वायत्तता पर किए हमले किए जाने की अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने कड़ी भर्त्सना की है।

जानकारी हो कि केरल में सीपीआई (मार्क्सवादी) विचारों की स्वतंत्रता पर लगातार हमले कर रही है तथा राज्य की सरकारी मशीनरी गुंडों को संरक्षण देने में व्यस्त है। एसएफआई द्वारा कालीकट विश्वविद्यालय में राज्यपाल के आगमन पर बाधा डालने का प्रयास किया गया, राज्यपाल द्वारा नामांकित सम्मानित सीनेट सदस्यों के साथ बदसलूकी की गई। ऐसी घटनाएं लगातार केरल के शिक्षण संस्थानों में देखने को मिल रही हैं और वर्तमान में केरल का अराजक परिवेश वामपंथ के हिंसक, अराजक और अलोकतांत्रिक चरित्र को उजागर कर रहा है।

अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री श्रवण बी राज ने कहा कि पिछले दिनों एसएफआई द्वारा राज्य के शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों-छात्रों के साथ मारपीट, मीडिया संस्थानों को डराने-धमकाने के प्रयास तथा शैक्षणिक गतिविधियों को नकारात्मक तरीके से प्रभावित करने का कार्य किया गया। साथ ही केरल के शिक्षण संस्थानों में राजनीतिक हिंसा के कारण विचारों की स्वतंत्रता को छिन्न-भिन्न करने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। अभाविप ऐसी समाज विरोधी गतिविधियों में संलिप्त अराजकतावादी वामपंथियों की कड़े शब्दों में निंदा करती है।

इस मामले में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि केरल में सत्ताधारी दल हिंसक तत्वों का संरक्षण कर रहा है। केरल में अभाविप कार्यकर्ताओं एवं सामान्य छात्रा-छात्र के साथ निरंतर मारपीट की घटनाएं हो रही हैं । अभाविप कार्यकर्ताओं के घरों पर हो रहे हमले वामपंथियों की हिंसक मानसिकता का परिचायक है। केरल के शैक्षणिक संस्थानों में हिंसक घटनाओं, वामपंथियों की अराजकता को रोकने के लिए शीघ्र कड़े कदम उठाए जाने की आवश्यकता है । ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

उत्तर प्रदेश

बलात्कार आरोपियों के संरक्षणकर्ताओं पर भी हो कड़ी कार्रवाई : अभाविप

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर स्थित आईआईटी में गत नवंबर माह में एक छात्रा के साथ हुई सामूहिक बलात्कार की घटना के दो माह बाद संलिप्त आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपियों की गिरफ्तारी होने के बाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने मांग की है कि दो माह तक आरोपियों को संरक्षण देने वालों को भी चिन्हित करके उनके विरुद्ध भी सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जानी चाहिए।

अभाविप पीड़िता को न्याय एवं परिसर की सुरक्षा के लिए गत 3 नवंबर से आंदोलन करती आ रही थी और सभी आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए प्रशासन पर बढ़ाव बना रही थी। अभाविप की काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इकाई ने वाराणसी पुलिस कमिश्नरेट से मांग की है कि प्रकरण में जल्द से जल्द आरोप पत्र दाखिल कर आरोपियों को कड़ी से कड़ी सज़ा सुनिश्चित की जाए, जिससे समाज में ऐसे अपराध करने वालों के लिए सख्त संदेश जाए। इसके साथ ही अभाविप ने परिसर में सभी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उचित कदम उठाने की मांग की है।

अभाविप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इकाई अध्यक्ष एवं काशी प्रांत मंत्री अभय प्रताप सिंह के अनुसार आरोपियों की गिरफ्तारी में विलम्ब होने के कारण पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्नचिन्ह खड़े हो रहे थे। अभाविप चाहती है कि जांच करके आरोपियों के संरक्षणदाताओं पर भी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। अभाविप इकाई मंत्री पुनीत मिश्र ने कहा कि दोषियों को ऐसी सख्त सजा मिले, जिससे समाज में ऐसे अपराध करने वालों के मध्य सख्त संदेश जाए। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

आरजेडी कैडर की तरह काम कर रही बिहार पुलिस

आरा में हुए पुलिस लाठीचार्ज में 13 छात्र घायल

बिहार के आरा स्थित वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा लंबे समय से छात्रों की समस्याओं को अनदेखा किया जा रहा है, जिससे छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। विश्वविद्यालय प्रशासन की छात्र विरोधी नीतियों एवं समस्याओं के प्रति अनदेखी के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) द्वारा किए गए आंदोलन के दौरान बिहार पुलिस ने बर्बरतापूर्वक लाठी चार्ज किया । पुलिस लाठी चार्ज में आंदोलन करने वाले तेरह से अधिक छात्र गंभीर रूप से घायल हुए। कार्रवाई के दौरान कई छात्राओं के साथ भी पुलिसकर्मियों ने बदसलूकी की।

अभाविप के 18 सूत्री मांगों को लेकर यह आंदोलन विश्वविद्यालय सीनेट बैठक के दौरान गत 23 दिसंबर को किया जा रहा था। 18 सूत्री मांगों में मुख्य रूप से छात्रसंघ चुनाव की तिथि अविलंब घोषित करने, महाराजा कॉलेज में लॉ की पढ़ाई शीघ्र शुरू कराने, विश्वविद्यालय में शिक्षकों एवं कर्मचारियों की कमी पूरी करने, लंबित परीक्षाओं की तिथियां शीघ्र घोषित करने एवं परीक्षा परिणाम में आई त्रुटियों को ठीक करने, विद्यार्थियों के लिए नए छात्रावासों का निर्माण कराने जैसी मांगे शामिल हैं। घटना वाले दिन आंदोलनकारी छात्र अपनी मांगों से कुलाधिपति को अवगत कराने के लिए कार्यालय जाना चाह रहे थे। छात्रों की इस मांग पर वहां पर तैनात पुलिसकर्मियों ने प्रदर्शनकारियों पर बर्बर तरीके से लाठी बरसाना शुरू कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कुछ देर के लिए पूरा परिसर रणक्षेत्र में बदल गया। छात्र-छात्राएं भागते और पिटते दिखाई दिए। पुलिस लाठीचार्ज के कारण कई आंदोलनकारी छात्र घायल हो गए।

घटना पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अभाविप बिहार प्रांत मंत्री अभिषेक यादव ने कहा कि वीर कुंवर सिंह विश्व विद्यालय में अभाविप कार्यकर्ताओं पर बर्बरतापूर्वक लाठी चार्ज करना बिहार सरकार का अत्यंत निंदनीय और तानाशाही कृत्य है। नीतीश कुमार

के कुशासन के कारण राज्य में शिक्षा क्षेत्र की हालत प्रतिदिन ख़राब होती जा रही है और बिहार सरकार, पुलिस की लाठी का दुरुपयोग छात्रों, युवाओं, महिलाओं सहित जनता की आवाज दबाने के लिए कर रही है। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल के अनुसार बिहार की वर्तमान सरकार युवाओं की आशाओं को कुचल रही है। विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम समय से पूरे नहीं हो रहे, तीन वर्षीय कोर्स पांच से छह वर्षों में पूरे हो रहे हैं। हर तरफ पलायन की स्थिति बनी हुई है, लेकिन राज्य सरकार सोई हुई है। छात्रों-युवाओं की उचित मांगों पर पुलिस लाठीचार्ज कर रही है । बिहार की बदहाल शिक्षा व्यवस्था को सुधारने की मांग को लेकर विद्यार्थी परिषद का आंदोलन और अधिक तेज होगा।

महिला सिपाही होते हुए छात्रा पर लाठी बरसाते रहे थाना प्रभारी

घटनास्थल पर महिला सिपाही के होने के बावजूद एक थाना प्रभारी छात्रा पर लाठी बरसाते देखे गए। जानकारी के अनुसार उदावंतनगर के थाना प्रभारी ने एक छात्रा पर लाठियां बरसा दी। पुलिस ने छात्राओं को गंदे पानी वाले गड्ढे में भी ढकेल दिया। यह सब जब हो रहा था तो मौके पर महिला सिपाही भी मौजूद थी । ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

जन्मभूमि पर पुनः विराजेंगे भगवान श्रीराम

22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए सज गई अयोध्या

| संजय दीक्षित |

वह घडी आ ही गई, जिसकी प्रतीक्षा सनातन हिन्दू समाज सदियों से कर रहा था। वह घडी आ ही गई, जब अयोध्या स्थित अपनी जन्मभूमि में भगवान रामलला पुनः अपने भव्य मंदिर में विराजेंगे। इस घडी की प्रतीक्षा भारत ही नहीं, वरन विश्व के अनेकों देशों में रहने वाले सनातनी हिन्दुओं के साथ ही भगवान श्रीराम में आस्था रखने वाले करोड़ो लोग कर रहे थे। सभी के मन-मस्तिष्क में वर्षों से यह प्रश्न वर्षों से गूंज रहा था कि लोहे के जाल में बंद और टाट के अंदर विराजमान भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर कब बनेगा? कब भगवान श्रीराम अपनी जन्मभूमि में निर्मित होने वाले भव्य मंदिर में विराजमान होकर विश्व कल्याण का आशीर्वाद देंगे?

प्रतीक्षा की घडी समाप्त होने वाली है । उत्तर प्रदेश स्थित अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर तैयार हो चुका है। आगामी 22 जनवरी को वैदिक विधि-विधान के साथ भगवान श्रीराम अपनी जन्मभूमि में निर्मित भव्य मंदिर में पुनः विराजेंगे । समय साक्षी है कि भगवान श्रीराम के प्रति आस्था, श्रद्धा एवं विश्वास रखने वाले सनातन हिन्दू समाज के अंदर क्रोध तो था, पर क्रोधित सनातन हिन्दू समाज ने भारत की व्यवस्था के प्रति कभी विद्रोह नहीं किया। सनातन हिन्दू समाज के अंदर क्रोध का यह भाव 21 मार्च 1528 से था, जब विदेशी मुस्लिम आक्रांता बाबर ने अपने सेनापति मीर बाकी के माध्यम से भगवान श्रीराम के मंदिर को नष्ट करा दिया था। भारत के मूल सनातन हिन्दू समाज की आस्था, श्रद्धा और विश्वास को नष्ट करने के लिए भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर कब्ज़ा करके एक इमारत को अवैध रूप से खड़ा कर दिया गया, जो हर पल सनातन हिन्दू समाज का

उपहास कर रही थी। आक्रांता बाबर ने बलपूर्वक जन्मभूमि पर कब्ज़ा तो कर लिया था, लेकिन पवित्र जन्मभूमि में जन्म लेने वाले भगवान श्रीराम को हिन्दुओं के हृदय एवं मन-मस्तिष्क से निकालने में असफल रहा।

हिन्दू धर्मग्रंथों में अयोध्या की भव्यता एवं पवित्रता के भाव को देखा जा सकता है । अयोध्या स्थित जन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण भगवान श्रीराम के पुत्र कुश ने कराया था। भगवान श्रीराम के स्वधाम गमन के बाद सरयू नदी में आई बाढ़ से अयोध्या की ऐतिहासिक एवं भव्य वैभव को काफी क्षति पहुंची थी। ऐसे में भगवान श्रीराम के पुत्र कुश ने अयोध्या की विरासत को नए सिरे से सहेजा और जन्मभूमि पर विशाल मंदिर का निर्माण कराया। सदियों तक यह मंदिर अपने भव्य स्वरूप में सनातन हिन्दू समाज के लिए आस्था, श्रद्धा एवं पूजा-अर्चना का केंद्र बना रहा और जब मंदिर जीर्ण-शीर्ण होने लगा तो 57 ईसा पूर्व राजा विक्रमादित्य ने पुनः भव्य मंदिर का निर्माण कराया। सदियों तक भगवान श्रीराम का मंदिर सनातन हिन्दू समाज को प्रेरणा शक्ति का केंद्र बिंदु रहा। भारत की भूमि पर जब विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं का प्रवेश हुआ, उसके बाद सनातन हिन्दू धर्म, संस्कृति, आस्था, श्रद्धा एवं विश्वास को खंडित करने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। हिन्दुओं की आस्था एवं श्रद्धा को खंडित करने के लिए अयोध्या स्थित भगवान श्रीराम के मंदिर को नष्ट कर दिया गया। आक्रांता बाबर ने मात्र अपने अहम को तुष्ट करने और भारत में मुसलिम धर्म के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से मंदिर को नष्ट करा तो दिया, पर सनातन हिन्दू समाज अपनी आस्था-श्रद्धा और जन्मभूमि पर बने मंदिर को भूल नहीं सका।

और फिर प्रारम्भ हुआ जन्मभूमि को पुनः हासिल करने का संघर्ष

इतिहास बताता है कि 1528 से लेकर 1858 तक जन्मभूमि को हासिल करने के लिए लगभग 76 युद्ध लड़े गए। अंग्रेजी शासनकाल के दौरान 1859 में पुनः संघर्ष हुआ तो जन्मभूमि स्थल को विवादित घोषित करके उसे बाड़बंदी के दायरे में समेट दिया गया । सुनियोजित रूप से अंग्रेजी सत्ता ने परिसर के अंदरूनी हिस्से में मुस्लिम वर्ग को और बाह्य क्षेत्र में सनातन हिन्दू समाज को पूजन करने का आदेश तो दिया, पर आदेश को सनातन हिन्दू समाज ने मानने से इंकार कर दिया। अंततः 1885 में भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर अवैध रूप से कब्ज़ा करके बनाए गए विवादित ढांचे को हटाने का मामला फ़ैजाबाद न्यायालय पहुंच गया। यहां भी अंग्रेजी सत्ता की कुटिल नीति सामने आई और अंग्रेज न्यायाधीश ने हिन्दू पक्ष की सभी अपील ख़ारिज कर दीं। लेकिन क़ानूनी लड़ाई लगातार जारी रही।

मानव स्वभाव में सहनशीलता का स्थान तो है, पर एक हद के बाद सहनशीलता का भाव स्वतः समाप्त हो जाता है। ऐसा ही कुछ 6 दिसंबर 1992 को उस समय हुआ, जब सनातन हिन्दू समाज ने विवादित ढांचे को हटा दिया। इसके साथ ही जन्मभूमि पर भगवान श्रीराम की पूजा-अर्चना आम जनता के लिए प्रारम्भ तो हो गई, लेकिन क़ानूनी बाधाओं के कारण भगवान श्रीराम को लोहे के सीखचों में कैद कर दिया गया। पर सनातन हिन्दू समाज "हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम" जैसे भजन को गुनगुनाते हुए न्यायालय में लगातार क़ानूनी लड़ाई लड़ता रहा। तारीख पर तारीख गुजरती गई और सुनवाई होती रही। 2010 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में जन्मभूमि को को सुन्नी वक्फ बोर्ड, रामलला विराजमान और निर्मोही अखाड़ा के बीच तीन बराबर हिस्सों में बांटने का आदेश तो सुनाया, लेकिन 2011 में उच्चतम न्यायालय ने इस निर्णय पर रोक लगा दी। क़ानूनी लड़ाई जारी रहने के बाद 2017 में उच्चतम न्यायालय ने दोनों पक्षों के सामने समझौता करने का भी प्रस्ताव रखा, लेकिन समझौते करने का कोई आधार ही नहीं था। इसलिए समझौते का प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया।

आखिर में 16 अगस्त 2019 को उच्चतम न्यायालय ने चालीस दिन के तक चली सुनवाई के बाद अपना निर्णय सुरक्षित रख लिया । उच्चतम न्यायालय के पांच न्यायाधीशों की पीठ ने 9 नवम्बर 2019 को जन्मभूमि के पक्ष में अपना अंतिम निर्णय सुनाया और 2.77 एकड़ भूमि सनातन हिन्दू समाज को को सौंप दी। यह वह पल था, जिसकी प्रतीक्षा सनातन हिन्दू समाज सदियों से कर रहा था। यह वह पल भी था, जिसके लिए लगभग पांच सदियों तक संघर्ष हुआ और इस संघर्ष में लाखों हिन्दुओं ने अपना जीवन बलिदान कर दिया। यह वह पल भी था, जब स्वतन्त्र भारत के इतिहास का बहुप्रतीक्षित, महत्वपूर्ण और निर्णायक सिद्ध होने वाला निर्णय आख़िरकार आ गया था।

उच्चतम न्यायालय के निर्णय के बाद अयोध्या स्थित भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य मंदिर के निर्माण

की रूपरेखा तैयार हुई और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 अगस्त 2020 को अभिजीत मुहूर्त में मंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन करने के साथ ही शिलान्यास किया। अब मंदिर निर्माण का काम प्रारम्भ हुआ। लगभग दो वर्ष जब कोरोना के कारण देश पूरी तरह से ठहर गया था, उस समय भी अयोध्या में मंदिर निर्माण कार्य होता रहा। परम्परागत नागर शैली में बनाए जा रहे मंदिर के प्रथम चरण का कार्य लगभग समाप्त हो चुका है। तीन तल वाले भव्य मंदिर को पूर्णता दिसंबर 2024 तक मिलेगी, किंतु प्राण प्रतिष्ठा के साथ मंदिर के जिस भूतल में रामलला विराजेंगे, वह पूरी तरह तैयार हो चुका है।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आगामी 22 जनवरी को भगवान श्रीरामलला के अभिषेक एवं प्राण प्रतिष्ठा होगी। इससे पहले अष्टकोणीय गर्भगृह में 15 जनवरी को भगवान रामलला के विग्रह (भगवान रामलला के बालस्वरूप की मूर्ति) की स्थापना की जाएगी। 16 जनवरी से विग्रह के अधिवास का अनुष्ठान प्रारम्भ होगा, जोकि प्राण प्रतिष्ठा का पहला कार्यक्रम होगा। 17 जनवरी को भगवान रामलला के विग्रह को नगर भ्रमण के लिए निकला जाएगा और फिर 18 जनवरी से प्राण-प्रतिष्ठा के लिए विधिपूर्वक पूजा-अर्चना प्रारम्भ होगी।19 जनवरी को अग्नि देवता का आह्वान करके यज्ञ अग्नि की स्थापना की जाएगी। गर्भ गृह को सरयू जल से भरे 81 कलश से 20 जनवरी को धोने के बाद वास्तु की पूजा होगी और फिर.विभिन्न तीर्थ स्थलों से 125 कलशों में लाए गए जल से 21 जनवरी को भगवान रामलला का स्नान कराया जाएगा।

मृगशिरा नक्षत्र में 22 जनवरी को मध्यान्ह भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी। प्राण प्रतिष्ठा के लिए नवनिर्मित गर्भगृह में भगवान रामलला की एक भव्य मूर्ति का स्थापना की जाएगी और उस समय केवल पांच लोग गर्भगृह में उपस्थित रहेंगे। इनमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, संघ प्रमुख मोहन भागवत एवं प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान के आचार्य शामिल हैं। प्राण प्रतिष्ठा के लिए 84 सेकंड का अति सूक्ष्म मुहूर्त काशी के ज्योतिषाचार्य पंडित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ द्वारा निकला गया है । यह शुभ मुहूर्त मात्र 84 सेकंड का होगा, जो 12 बजकर 29 मिनट 8 सेकंड से 12 बजकर 30 मिनट 32 सेकंड तक ही होगा। भगवान रामलला की प्राणप्रतिष्ठा से पहले 1 जनवरी से लेकर 15 जनवरी के मध्य देश भर में पूजित अक्षत (हल्दी-चावल) का वितरण घर-घर में किया जाएगा, जो हर देशवासी को मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में सम्मिलित होने का न्यौता देगा।

श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। समारोह में हिस्सा लेने के लिए सात हजार से अधिक गणमान्य, प्रतिष्ठित, राजनीतिक, सामाजिक एवं साधु-संतों को आधिकारिक रूप से निमंत्रित किया गया है। पूरी अयोध्या नगरी को भव्य रूप से सजाया-संवारा जा रहा है। मंदिर निर्माण कार्य से जुड़ा हर व्यक्ति अपने-अपने ढंग से भगवान रामलला के लिए समर्पित भाव से अपने कार्य को करने में जुटा है। सुरक्षा के लिए व्यापक प्रबंध किए गए हैं, जिनमें राज्यस्तरीय सुरक्षाकर्मियों के साथ ही केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों की भी सहभागिता भी है । 22 जनवरी को प्राणप्रतिष्ठा होने के बाद 23 जनवरी को भव्य मंदिर सनातन हिन्दू समाज के लिए खोल दिया जाएगा । यह सनातन हिन्दू समाज के लिए खुशी और उत्साह का वह पल होगा, जिसकी प्रतीक्षा करते हुए कई पीढ़ियां गुजर गईं। ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' जनवरी 2024 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

ABVP submits a Memorandum to Union Education Minister

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) Jammu-Kashmir delegation submit a memorandum to Union Education Minister Dharmendra Pradhan, detailing crucial demands for the education sector in the region. National Secretary Ghulam Mustafa Ali, State President ABVP Dr. Ajay Sharma, State Secretary Akshi Billowria, National Convener Students For Sewa Muskaan Anand, Special Invitee in NEC Dr Permendr Singh, State Organising Secretary Tilak Thakur are part of this delegation.

ABVP State Secretary Akshi Billowria said that memorandum encapsulates a series of key concerns and recommendations aimed at fostering the growth and development of the education sector in Jammu-Kashmir. ABVP highlighted critical issues such as infrastructural improvements in educational institutions, enhancement of teaching quality, provisions for digital learning infrastructure and the necessity for increased educational access across remote areas of the region.

ABVP emphasized the urgent need for greater attention and resources directed towards elevating the standard of education in the region. They stressed the importance of ensuring a conducive and enabling environment for students, educators and educational institutions to thrive.

ABVP demands to provide well established and proper infrastructure in Central University of Jammu and Kashmir, Setting up of National Law University at Jammu at earliest, Opening of Cluster based university in Hilly terrains of Jammu-Kashmir i.e., In Doda, Kishtwar, Ramban Belt and Rajouri, Poonch Belt so as to make Education accessible to remotest areas.

ABVP is of the firm opinion to open residential schools in border areas so that the education of the wards living nearby border areas couldn't get suffered and also demands to take proactive steps in strengthening

Kendriya Vidyalayas in far flung areas and demands to upgrade the infrastructure of these schools as these are being run in rental accomodation and that too in 3-4 rooms which hampers the effective learning outcome.

National Secretary Ghulam Mustafa Ali said, ABVP express confidence that the memorandum would draw the attention of the Union Education Minister and the concerned authorities and urges them to take proactive measures to address these pressing issues in the education sector of Jammu-Kashmir. ■

(Rastriya Chatrashakti Team)

अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पद्म भूषण प्रो. वेद प्रकाश नंदा का निधन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, प्रख्यात विधिवेत्ता पद्म भूषण प्रो. वेद प्रकाश नंदा के निधन पर विद्यार्थी परिषद ने गहन शोक व्यक्त किया है। अभाविप की स्थापना के प्रारंभिक दशकों में संगठन को सुदृढ़ बनाने एवं संगठन विस्तार में स्वर्गीय वेदप्रकाश नंदा का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने 1951 में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री एवं 1956-1959 तक राष्ट्रीय अध्यक्ष के दायित्व को संभाला था।

उनका जन्म 1934 में अविभाजित भारत के गुजरांवाला में हुआ था। पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में परास्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा लेने के बाद उन्होंने नॉर्थ-वेस्टर्न यूनिवर्सिटी से एलएलएम किया और फिर अमेरिका स्थित येल यूनिवर्सिटी में भी अध्ययन किया। 1972 में वह डेनवर विश्वविद्यालय के स्टर्म कॉलेज ऑफ लॉ में विधि विषय के प्रोफेसर थे। भारत से लेकर विदेश तक, उनके पढ़ाए-प्रेरणा पाए विद्यार्थी रहे हैं। अमेरिका की पूर्व सेक्रेटरी ऑफ स्टेट कोंडोलीज़ा राइस, ईरान के पूर्व विदेश मंत्री जवाद ज़रीफ़, न्यू मैक्सिको सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश पेट्रीसियो सेर्ना जैसे अनेक लोग प्रोफेसर नंदा के छात्र रहे हैं। वह विश्व न्यायिक संघ के मानव अध्यक्ष, अंतर राष्ट्रीय कानून संघ (अमेरिकन शाखा) के मानद उपाध्यक्ष, अमेरिकी मानव अधिकारी संस्थान की सलाहकार परिषद के सदस्य रहे हैं। डॉ. नंदा को ओरिएंटल फिलॉसॉफी पुरस्कार, विश्व कानूनी विद्वान पुरस्कार, नागरिक अधिकार पुरस्कार, मानवाधिकार और विशेष उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

वह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को एक राष्ट्रव्यापी संगठन बनाने के लिए किए गए अनेक सफल प्रयत्नों में सहभागी रहे। एक कुशल संगठनकर्ता के साथ उनका जीवन सादगी से परिपूर्ण एवं सर्वसुलभ था। उन्होंने भारतीय विचारों की अलख जगाने का

कार्य कर रहे 'हिंदू स्वयंसेवक संघ' में अमेरिकी क्षेत्र के संघचालक के रूप में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रो. नंदा ने अमेरिका में प्रवासी भारतीयों के बीच भारत की संस्कृति व सभ्यता के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। 2011 में उन्हें छठा भारतवंशी गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रो. नंदा द्वारा शिक्षा क्षेत्र किए गए कार्य को अभिज्ञान प्रदान करते हुए 2018 में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उनका स्नेह अभाविप कार्यकर्ताओं को उनके जीवन के अंतिम वर्षों तक मिला। कोरोनाकाल के दौरान वह अभाविप द्वारा आयोजित वेब गोष्ठियों में शामिल हुए तथा विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

स्वर्गीय वेदप्रकाश जी का सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा, मानवाधिकारों तथा शिक्षा क्षेत्र को समर्पित रहा है। ऐसे कुशल संगठनकर्ता, विधि विषय के लब्धप्रतिष्ठ जानकार के देहावसान पर अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत एवं राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद में निमंत्रित सदस्य प्रा. मिलिंद मराठे ने सभी कार्यकर्ताओं की ओर से पुण्यात्मा को अंतिम प्रणाम निवेदित करते हुए आत्मा की सद्गति प्राप्त हेतु प्रार्थना की है। ■

वेद प्रकाश नंदा

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, अभाविप

जन्म : 1934

मृत्यु : 01 जनवरी, 2024

RNI NO.: DELBIL/2017/73636

POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI
POSTING REGISTRATION NO. DL(C)-11/1409/2024-26

राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियां